वर्ष-15, अंक-10 वि.सं. 2076, युगाब्द 5121 दिसम्बर 2019 मूल्य : 20.00
सदस्यता शुल्क : संरक्षक : रु. 5000/- आजीवन : रु. 2000/- वार्षिक : रु. 200/-

मासिक पत्रिका

सेवा संवाद

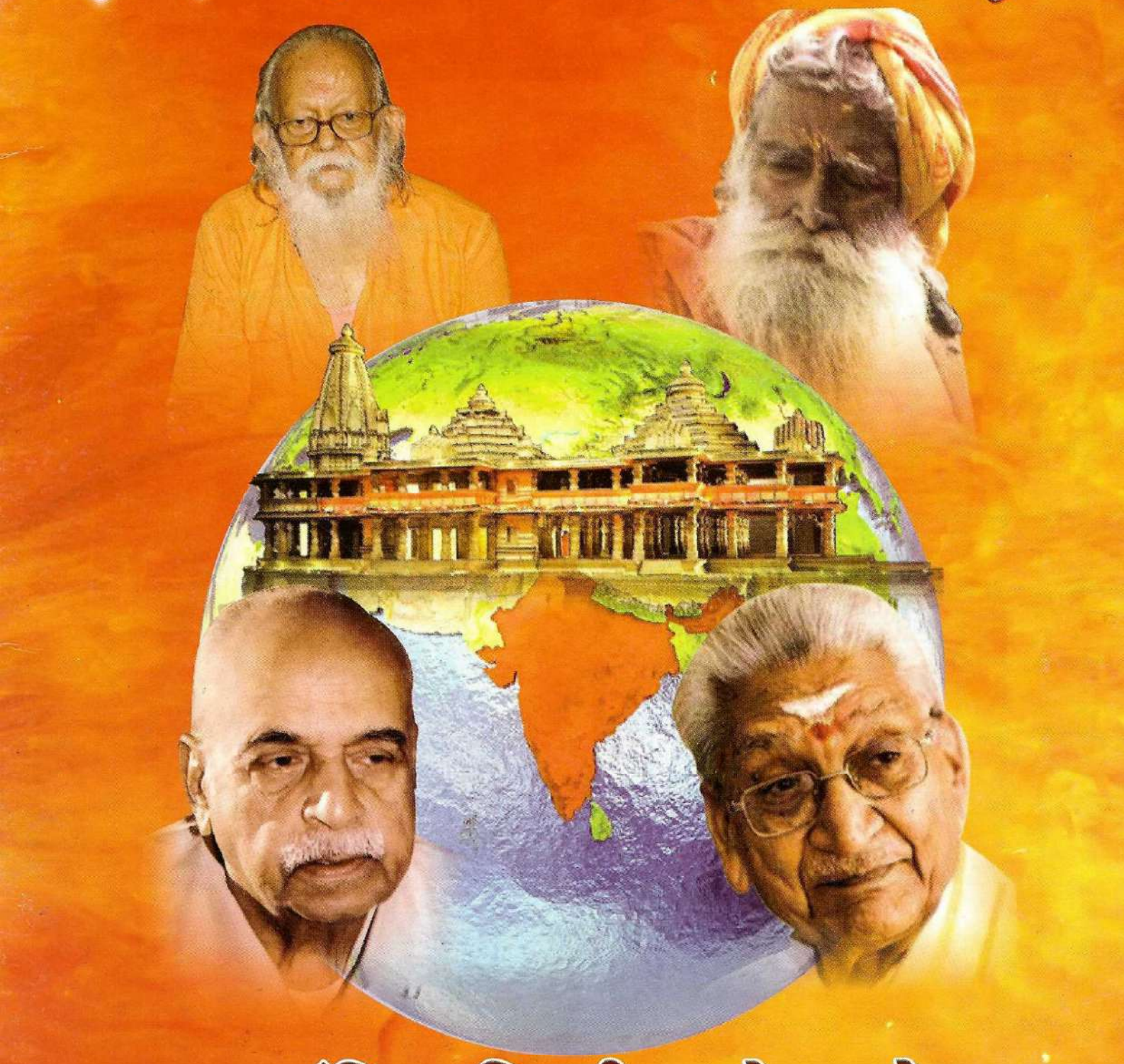

राम मंदिर निर्माण के पुरोधा

नेत्रकुम्भ चिकित्सालय में वरिष्ठ नेत्र चिकित्सकों द्वारा नेत्र चिकित्सा

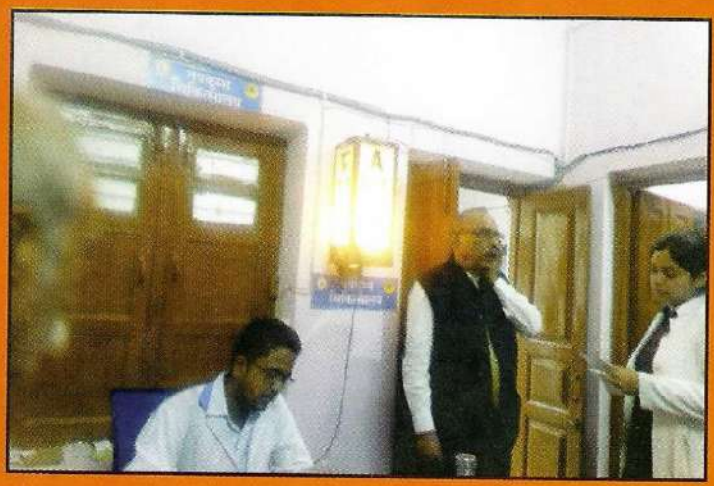

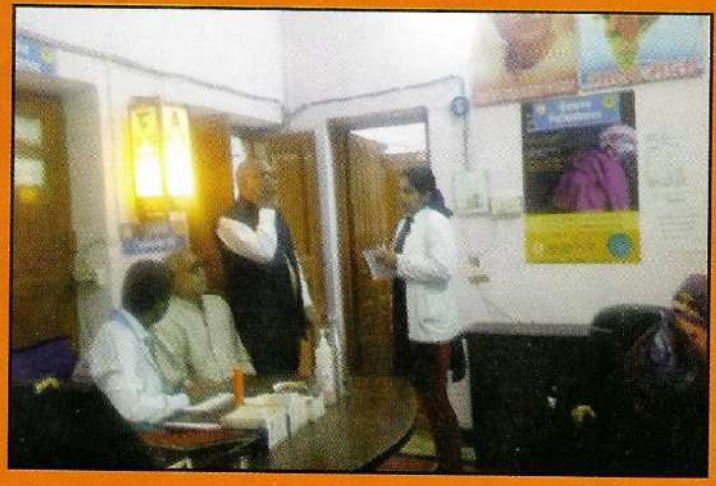

भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा प्रकाशित मासिक पत्र

सेवा संवाद

वर्ष-15, अंक-10 | वि.सं. 2076, युगाब्द 5121 | दिसम्बर 2019 | मूल्य : 20.00

सदस्यता शुल्क : संरक्षक : रु. 5000/- आजीवन : रु. 2000/- वार्षिक : रु. 200/-

मार्गदर्शक

डॉ0 अवधेश प्रसाद सिंह
अध्यक्ष

डॉ0 देवेन्द्र प्रताप सिंह
सचिव

राहुल सिंह
सहसचिव

ब्रह्मदेव शर्मा
संस्थापक न्यासी

सम्पादक
डॉ. शिवभूषण त्रिपाठी
मो. 09451176775

सह सम्पादक
राजेश
मो. 09793120738

प्रबन्धक
विजय अग्रवाल
मो. 9415020996

मुद्रक एवं प्रकाशक
जितेन्द्र कुमार अग्रवाल
मो. 9415003111

कार्यालय : भाऊराव देवरस सेवा न्यास
सी-91, निरालानगर, लखनऊ (उ.प्र.) 226020
दूरभाष : 0522-4001837, 2789406
Email : sewasamwad@gmail.com

आलोक : *प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के निजी विचार हैं।*
प्रकाशक एवं सम्पादक का उससे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सहयोग राशि नकद अथवा चेक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा 'सेवा संवाद (भाऊराव देवरस सेवा न्यास)' के पक्ष में जो लखनऊ में देय हो, भेजने की कृपा करें अथवा हमारे बैंक ऑफ इण्डिया, निराला नगर, लखनऊ (IFSC : BKID0006806) के खाता संख्या 680610110000102 में जमा/अन्तरित करा कर कार्यालय पते पर सूचित करने की कृपा करें।

इस अंक में

1.	अपनी बात	डॉ. शिवभूषण त्रिपाठी	5
2.	आत्मावलोकन (भारतीय संस्कृति पुर्नस्थापना का सुप्रीम निर्णय)	राजेश	6
3.	भारतीयता में समरस होने का समय	रामिश सिद्दीकी	7
4.	इन पांच न्यायाधीशों का आदेश इतिहास में दर्ज	संकलन	9
5.	जिन्हें भुलाया नहीं जा सकेगा...	रविप्रकाश श्रीवास्तव	10
6.	अटल ने रात में ब्रह्मदत्त को क्यों भेजा अयोध्या	संकलन	14
7.	राम मंदिर आंदोलन में तीन पीढ़ी से सक्रिय है गोरक्षपीठ	संकलन	16
8.	आस्था....श्रद्धा....सद्भाव....संयम से फैसले का स्वागत	संकलन	19
9.	अभिभावक बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य को नजर अंदाज...	नेहा आनंद	23
10.	शिक्षा ने दूसरी औरतों की मदद करने का हौसला दिया	सीफिया हनीफ	24
11.	जब गहरी नींद ही रोग बन जाए...	डॉ. स्कन्द शुक्ल	25
12.	सेवा की पहली सीख	संकलन	26
13.	संतोष धर्म	श्रीमती रमन त्रिपाठी	27
13.	"सच्चा सौदा" करना सिखाते हैं गुरु नानकदेव जी	इंद्रजीत कौर	29
14.	डेंगू व स्वाइन फ्लू में फायदेमंद है	संकलन–शुभी	30

जब तक आप अपनी समस्याओं एंव कठिनाइयों की वजह दूसरों को मानते है, तब तक आप अपनी समस्याओं एंव कठिनाइयों को मिटा नहीं सकते।

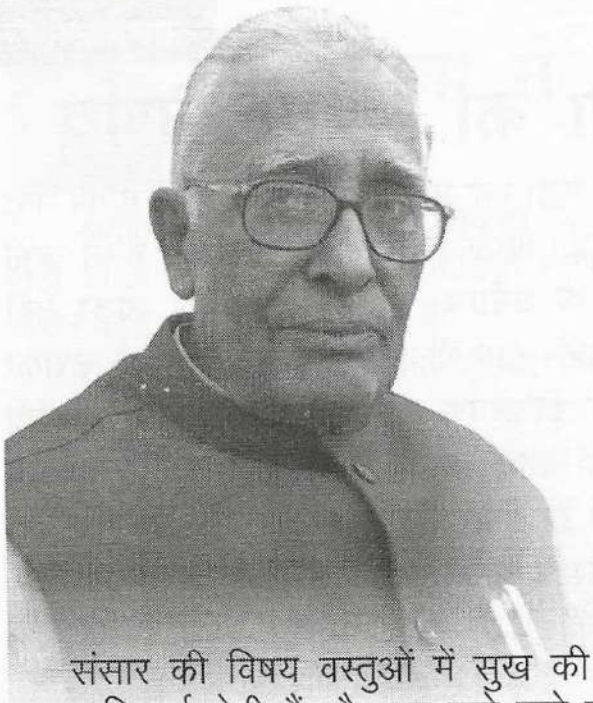

अपनी बात

संसार की विषय वस्तुओं में सुख की मिथ्या चमक दिखाई देती हैं और हम उसे पाने के लिए लालायित हो उठते हैं। शरीर की मन की इस भूख को रोक पाना और बुद्धि को भ्रष्ट होने से बचा पाना केवल मनुष्य का ही अधिकार है। यही उसकी महिमा भी है। जो मनुष्य इस ऊँचाई को, पूर्णता को प्राप्त करता है उसकी उपमा सागर–तट पर बने उस दीप स्तम्भ से दी जा सकती है जो भीषण लहरों के आघात से भी प्रभावित नहीं होता है। ऐसा मनुष्य सचमुच ही जीवन–सागर में दीप स्तम्भ की तरह गौरव के साथ अविचल खड़ा रह सकता है।

मनुष्य तो मूलतः दिव्य स्वभाव का ही होता है समस्त ज्ञान उसके अन्तर में समाहित होता है इसलिए ऊपर उठने की प्रेरणा हर हृदय में होती है। किन्तु जीवन की चुनौतियों को झेलते समय हमारी समझ में यह नहीं आता कि अन्दर की ओर प्रविष्ट होने का सही रास्ता कौन सा है। हमारे वेद –पुराण, शास्त्रादि श्रुतियां एक निर्दोष दिक्–सूचक यंत्र की भांति सदैव दिशा दिखाती हैं और जिस प्रकार नाविक उस दिक्–सूचक यंत्र के कार्य पर भरोसा और विश्वास रख कर आगे बढ़ता है उसी प्रकार हमें भी अपने शास्त्रों पर विश्वास रखकर अपनी जीवन – नौका को श्रद्धा पूर्वक तब तक आगे बढ़ाते रहना है जब तक हम अपने लक्ष्य की प्राप्ति, परम शांति अथवा पूर्णता को न प्राप्त कर लें। यही बात स्वामी विवेकानन्द जी का भी कहना है – **"उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत"** अर्थात– उठो, जागो और ध्येय प्राप्ति तक न रुको। आगे बढ़ने की इस प्रक्रिया में जहाँ एक ओर शास्त्र हमारे मार्ग दर्शक हैं वहीं दूसरी ओर शास्त्रज्ञ वेदानुकूल आचरणवान, धर्मपरायण सन्त–महात्मा, योगी तपस्वी, राष्ट्रभक्त, वीर महापुरुष, गृहस्थ, मातृशक्ति देवी–स्वरूपा अनेक नादियां भी हमारे बीच विद्यमान हैं जो हमारे रोजमर्रा के जीवन को प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते रहते हैं। व्यक्ति का शरीर नश्वर है, देह–छोड़ने के पश्चात् शरीर तो दुबारा दिखता नहीं परन्तु उसका कार्य, विचार, व्यवहार अमर होते हैं। समय–समय पर उनको स्मरण करना हमारा धर्म भी है, उनके अनमोल कथन वचन हमें याद आते हैं और वे मन को प्रेरणा देते हैं, नयी उमंग, उत्साह निर्माण करते हैं, संम्रमित्र मन को दिशा देने का महत्वपूर्ण कार्य भी करते हैं। अमरत्व प्राप्त किये हुए व्यक्तियों में परम पूज्य बाला साहब देवरस, अटल विहारी बाजपेई, हिन्दुत्व के आराधक महामना मदन मोहन मालवीय, रामायण के प्रचारक रामानन्द सागर, महान गणितज्ञ श्री निवास रामानुजन आदि अनेक महत्वपूर्ण महापुरुषों ने राष्ट्रीय हित में बहुत महत्वपूर्ण योगदान किया था।

उन सबको स्मरण करते हुए उनके जीवन से प्रेरणा ग्रहण करने की दिशा में हम प्रयत्नशील हों–आगे बढ़ें यही हमारा इस अंक का अभिप्रेत / मूल उद्देश्य है। मा0 बाला साहब मितभाषी किन्तु हितकर भाषी थे, विभिन्न कार्यक्रमों के अवसर पर पूछे गये प्रश्नों का वे तत्काल सटीक उत्तर देने में सिद्ध हस्त थे। अनेक उपयोगी कल्याणकारी योजनाओं का शुभारंभ कर उन्होंने संघ को एक नई दिशा दी। मा. मोरोपंत पिंगले, मा. अशोक सिंहल, मा. आचार्य गिरिराज किशोर, कीर्तिशेष गोरक्षपीठाधीश्वर मंहत अवैद्यनाथ, मणिरामदास छावनी के महंत राम चन्द्र दास आदि सन्तों ने एक कुशल सेना नायक की भाँति वे सदैव चैतन्य एवं क्रियाशील रहते थे, उनका अनुशासन प्रिय व्यक्तित्व, उनकी उदारता और क्षमाशीलता नम्रता आदि सद्गुण हमारे लिए अनुकरणीय रहे हैं जिससे प्रेरित होकर हम समाज में, राष्ट्र में कुछ अच्छा कर सकेंगे। इसी आशा और विश्वास के साथ यह अंक आप को समर्पित है।

❑ शिव

आत्मावलोकन

भारतीय संस्कृति पुर्नस्थापना का सुप्रीम निर्णय

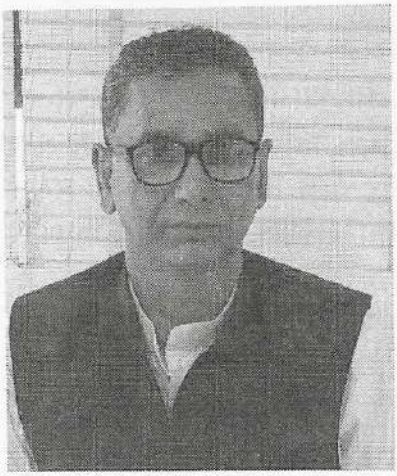

इतिहास दुनिया की सबसे बड़ी अदालत है। इससे बड़ी अदालत कोई नहीं है। सुप्रीम कोर्ट में क्या हुआ, हाई कोर्ट में क्या हुआ, लड़ाई के मैदान में क्या हुआ निवार्चन आयोग में क्या हुआ ये सब बातें आती है चली जाती है बाद में हमेशा रह जाता है केवल इतिहास और इतिहास का निर्णय हमेशा उसके पक्ष में गया है जो शक्तिशाली था इसने कभी उस का साथ नहीं दिया जो न्याय के साथ था जो सही था यदि ऐसा हो तो दिल्ली में बाबर रोड है राणा सांगा रोड नहीं है। क्योंकि बाबर विजयी हुआ राणा सांगा हार गया। भारत की हिन्दूशाही अफगानिस्तान से सिकुड़ते–सिकुड़ते यहां तक आ गयी। क्यों? क्योंकि हमने अपने मूल्यों की रक्षा के लिये स्वाभिमान का भाव नहीं दिखाया या सुशुप्ता अवस्था में रहे पर हजारों साल की आक्रान्ताओं के विनष्ट करने पर भी हम न तो सांस्कृतिक रूप से न ही वैचारिक रूप से हमारी अपनी श्रद्धा एवं आस्था में क्षीणता आयी है पर नष्ट नहीं हुई। अगर इतिहास को देखें तो हमने कभी किसी के धर्मग्रन्थ ऐतिहासिकता पर डांका नहीं डाला और जब भी हम कोई युद्ध हारे तो उसका मूल का विश्लेषण करेगें तो पायेंगे कि दुश्मन की सेना के साथ हमारी नेटिव आर्मी यानी भारतीय सिपाही ही हमारे खिलाफ लड़ा और हमें पराजित होना पड़ा। आज 500 साल के इतिहास को ठीक करने की दिशा में जो निर्णय आया है वह एक शुरूआत है अभी हमें आगे और जाना है।

भारत में संविधान की सत्ता है। संविधान में भारत के लोगों की निष्ठा है। सर्वोच्च न्यायालय के इस निर्णय में किसी पक्ष की हार जीत नहीं हुई है। संविधान ही सर्वोपरि सिद्ध हुआ है। श्रीराम जन्म भूमि पर भव्य मंदिर करोडों भारत वासियों की अभिलाषा रहा है। इसके लिए लाखों श्रद्धालु जेल गए हैं। उन्होंने बड़ा संघर्ष किया है। कोर्ट ने लगातार 40 दिन कार्यवाही चलाई। यह ऐतिहासिक परिश्रम है। सुप्रीम कोर्ट का फैसला अयोध्या के अलौकिक व स्वर्णिम भविष्य की शुरूआत है। राममंदिर निर्माण के लिए ट्रस्ट बनने से हर कार्य में पारदर्शिता रहेगी।

❑ राजेश

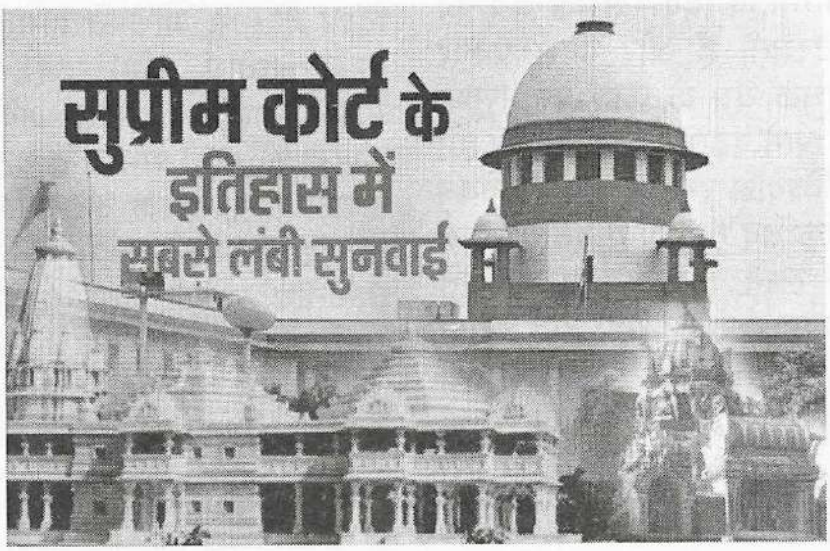

भारतीयता में समरस होने का समय

रामिश सिद्दीकी

अतीत को बदला नहीं जा सकता, पर उससे सही सीख लेकर आने वाली पीढ़ियों का भविष्य जरूर बेहतर बनाया जा सकता है।

सुप्रीम कोर्ट ने अपने ऐतिहासिक फैसले से सदियों पुराने राम जन्मभूमि–बाबरी मस्जिद विवाद को सुलझा कर देश में सांप्रदायिक सौहार्द की एक मजबूत नींव रख दी है। शीर्ष अदालत ने केंद्र सरकार को मंदिर निर्माण के लिए ट्रस्ट स्थापित करने और मस्जिद के लिए वैकल्पिक भूमि आवंटित करने का आदेश दिया है। देखा जाए तो यह विवाद हमारे समय के सबसे तल्ख मुद्दों में से एक था जिसका अब अंत हो गया है। हमारे स्वतंत्रता संग्राम के दौरान हिंदू और मुस्लिम, दो ऐसे समुदाय थे जो एक–दूसरे के बहुत करीब थे और कंधे से कंधा मिलाकर चलते थे, आज उसी सद्भाव की हमें अपेक्षा है।

इस्लामिक देशों में ऐसे पर्याप्त उदाहरण हैं जहां मस्जिदों को स्थानांतरित कर दिया गया है। मुस्लिम देश इस फार्मूले को पहले ही अपना चुके थे जो अपनी अर्थव्यवस्था की बढ़ती जरूरतों को पूरा करने के लिए अपने यहां स्थित मस्जिदों को स्थानांतरित कर रहे थे। धर्म एक ऐसा अनुशासन है जो अपने अनुयायियों को समाज का एक शांतिपूर्ण सदस्य बनने का संदेश देता है, लेकिन इसके विपरीत धर्म को हमेशा एक विभाजनकारी शक्ति के रूप में देखा गया। मैने यह बात कुछ वर्ष पहले भी कही थी कि भारतीय मुस्लिम नेतृत्व समूचे अयोध्या प्रकरण में मुस्लिम समुदाय के विचारों को एक सकारात्मक ढांचा नहीं दे पाया। समुदाय के नेताओं को अतीत से बाहर आकर देश को विकास की दिशा में आगे बढ़ाने में अपनी भूमिका निभानी चाहिए थी। इसके बजाय वे नकारात्मक भावनाओं में जकड़े रहे और अपने दिलों में नाराजगी को रखते हुए अपनी संपूर्ण शक्ति को नकारात्मक दिशा में लगाते रहे। एक राष्ट्र अपनी संस्कृति, समाज, आस्था और इतिहास का एक सम्मिश्रण होता है। संस्कृति और इतिहास का संरक्षण और किसी धर्म या आस्था में विश्वास किसी भी समाज के अस्तित्व के दो अलग–अलग पहलू हैं।

उदाहरण के लिए अरब देशों ने अपने इतिहास को पुनर्स्थापित करने के लिए पिछले कुछ वर्षो से भारी निवेश करना शुरू कर दिया है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि उन्होंने अपना धर्म त्याग दिया है। मैं एक बार संयुक्त अरब अमीरात के शहर दुबई में एक बहु–सांस्कृतिक कार्यक्रम में गया था जहां मैंने मिस्र के हॉल का दौरा किया था। मुझे यह देखकर बहुत आश्चर्य हुआ था कि एक मुस्लिम देश होने के बावजूद मिस्र अपनी इस्लाम से पूर्व की संस्कृति को विश्व के सामने लाने में बिल्कुल पीछे नहीं था, बल्कि वह इस्लाम पूर्व की संस्कृति को अपना अभिन्न अंग मानता है। यह हमारे लिए भी एक सीख थी। मिस्र का इतिहास किसी से छिपा नहीं है। 'मुस्लिम ब्रदरहुड' जैसा कट्टरपंथी मुस्लिम संगठन मिस्र की जमीन पर ही पनपा है, लेकिन ऐसा हिंसक संगठन भी मिस्र को अपने इतिहास एवं संस्कृति का सम्मान करने से नहीं रोक पाया।

भारतीय मुसलमानों के लिए भी यह जरूरी है कि वे इस देश का नागरिक होने के कारण यहां के विकास और भारत की प्राचीन संस्कृति के संरक्षण में सकारात्मक भूमिका निभाएं। भारत हमेशा से आध्यात्मिकता और आत्मज्ञान का जन्मस्थान रहा है। एक भारतीय के रूप में हमारे लिए आवश्यक है कि हम स्वयं को बेहतर बनाते हुए एक–दूसरे की आस्थाओं का सम्मान भी करें।

मुस्लिम समुदाय के चंद नेताओं ने न सिर्फ सामाजिक ताने–बाने को, बल्कि इस भावनात्मक मुद्दे पर आम आदमी की भावनाओं को भी काफी नुकसान पहुंचाया है। वर्तमान समय में भारत के मुस्लिम युवाओं के लिए अब बहुत आवश्यक हो गया है कि वे समुदाय के इन नेताओं का अंधानुकरण बिल्कुल न करें। उनके लिए जरूरी है कि वे अपनी सोच और ताकत को देश निर्माण के सकारात्मक कार्यो में लगाएं। मध्यकालीन यूरोप में जब धार्मिक व्यक्तियों द्वारा बौद्धिक उत्पीड़न अपने चरम पर था और

इतिहास को धीरे–धीरे मिटाया जा रहा था तब वहां चंद लोगों ने एक शांतिपूर्ण आंदोलन छेड़ा जिसे विश्व 'पुनर्जागरण' के नाम से जानता है। यह एक ऐसा आंदोलन था जिसने न सिर्फ उनके जीवन को, बल्कि पूरे विश्व को एक नई दिशा दी।

पुनर्जागरण ने मानवता को आधुनिक सभ्यता के मार्ग पर आगे बढ़ाया। उसका परिणाम आज हम देख रहे हैं, जो केवल एक समाज या एक देश तक सीमित नहीं है, बल्कि समस्त मानवजाति तक पहुंचा है। पुनर्जागरण ने यूरोपीय लोगों की सोच को हमेशा के लिए बदल दिया। जो लोग स्वयं अंधकार के दलदल में धंस चुके थे, उन्होंने अपनी इच्छाशक्ति से पूरी दुनिया की खोज कर डाली। भारतीय मुस्लिम समुदाय को आज एक ऐसे ही बौद्धिक पुनर्जागरण की जरूरत है, ताकि वे दशकों से फंसे पूर्वाग्रहों की गहराइयों से बाहर निकल सकें, लेकिन इस तरह के आंदोलन की शुरुआत तब होती है जब हम जानते और मानते हैं कि अतीत में हमसे क्या गलतियां हुई हैं। कोई भी व्यक्ति या समाज इतिहास में वापस जाकर उसे दोबारा नहीं लिख सकता है, लेकिन एक कार्य हम सब निश्चित रूप से कर सकते हैं। और वह है कि हम इतिहास से सबक लें, ताकि हम आने वाली पीढ़ियों के लिए एक बेहतर भविष्य का निर्माण करने में कामयाब हो सकें। एक राष्ट्र का सबसे बड़ा संसाधन उसके लोग होते हैं। यह स्वाभाविक है कि किसी भी राष्ट्र को विकास की राह पर आगे बढ़ाने के लिए वहां के नागरिक अपने राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखें।

(लेखक इस्लामिक विषयों के जानकार हैं)

स्मरणीय कोठारी बन्धु

समाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन की दिशा में रामजन्म भूमि मन्दिर निर्माण का सपना संजोए बाबरी मस्जिद डांचा ठहाने में स्वयं को बलिदान कर मार्ग का कंटक दूर करने वाले वन्दनीय

(राम कोठारी और शरद कोठारी 30 अक्टूबर 1990)

इन पांच न्यायाधीशों का आदेश इतिहास में दर्ज

जस्टिस रंजन गोगोई : मुख्य न्यायाधीश रंजन गोगोई पीठ की अगुवाई कर रहे हैं। उन्होंने 3 अक्टूबर 2018 को बतौर मुख्य न्यायाधीश पदभार ग्रहण किया था। 18 नवंबर, 1954 को जन्मे जस्टिस रंजन गोगोई 1978 में बार काउंसिल से जुड़े थे। 2001 में गुवाहाटी हाईकोर्ट में जज भी बने। वह पंजाब और हरियाणा हाईकोर्ट में बतौर जज 2010 में नियुक्त हुए। 2011 में पंजाब–हरियाणा हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश बने। 23 अप्रैल, 2012 को जस्टिस रंजन गोगोई उच्चतम न्यायालय के जज बने। बतौर मुख्य न्यायाधीश कार्यकाल में कई ऐतिहासिक मामलों को सुना है, जिसमें अयोध्या, एनआरसी, जम्मू–कश्मीर पर याचिकाएं शामिल हैं।

जस्टिस शरद ए बोबडे : पीठ में दूसरे जज शरद अरविंद बोबडे हैं। 1978 में वह बार काउंसिल ऑफ महाराष्ट्र से जुड़े। बॉम्बे हाईकोर्ट की नागपुर बेंच में लॉ की प्रैक्टिस की। 1998 में वरिष्ठ वकील बने। 2000 में उन्होंने बॉम्बे हाईकोर्ट में बतौर एडिशनल जज पदभार ग्रहण किया। वह मध्य प्रदेश हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश बने। 2013 में सुप्रीम कोर्ट में बतौर जज कमान संभाली। वह जस्टिस रंजन गोगोई के बाद अगले मुख्य न्यायाधीश होंगे।

जस्टिस डीवाई चन्द्रचूड़ : जस्टिस धनंजय यशवंत चन्द्रचूड़ ने 13 मई 2016 को उच्चतम न्यायालय के जज का पदभार संभाला था। उनके पिता जस्टिस यशवंत विष्णु चन्द्रचूड़ उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश रह चुके हैं। जस्टिस डीवाई चन्द्रचूड़ पहले इलाहाबाद हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश रह चुके हैं। वह बॉम्बे हाईकोर्ट में भी बतौर जज रह चुके हैं। बतौर जज नियुक्त होने से पहले वह देश के एडिशनल सॉलिसिटर जनरल रह चुके हैं।

जस्टिस अशोक भूषण : उत्तर प्रदेश से आने वाले जस्टिस अशोक भूषण का जन्म जौनपुर में हुआ था। वह 1979 में यूपी बार काउंसिल का हिस्सा बने, जिसके बाद इलाहाबाद हाईकोर्ट में वकालत की प्रैक्टिस की। उन्होंने इलाहाबाद हाईकोर्ट में कई पदों पर काम किया। 2001 में बतौर जज नियुक्त हुए। 2014 में केरल हाईकोर्ट के जज नियुक्त हुए। 2015 में मुख्य न्यायाधीश बने। 13 मई 2016 को उन्होंने उच्चतम न्यायालय के जज के रूप में कार्यभार संभाला।

जस्टिस अब्दुल नजीर : जस्टिस एस अब्दुल नजीर ने फरवरी 1983 में कर्नाटक हाईकोर्ट में वकालत शुरू की। 20 साल तक वकील रहने के बाद फरवरी 2003 में उन्हें कर्नाटक हाईकोर्ट में एडिशनल जज बनाया गया। 2004 में स्थायी जज बने। फरवरी 2017 में उच्चतम न्यायालय के जज बने। 2017 में उन्होंने तब के मुख्य न्यायाधीश जे एस खेहर के साथ तीन तलाक मामले पर कहा था कि कोर्ट किसी धर्म के निजी कानूनों में हस्तक्षेप नहीं कर सकती।

जिन्हें भुलाया नहीं जा सकेगा...

अशोक सिंहल : आंदोलन के मुख्य शिल्पी

अशोक सिंहल मंदिर आंदोलन के मुख्य शिल्पी थे। इसके पीछे उनके प्रभावी, संस्कार, संगठन एवं संवाद की अपूर्व सामर्थ्य थी। आगरा में जन्में सिंहल के पिता सरकारी कर्मचारी थे। 1942 में किशोरावस्था के ही दौरान वे आरएसएस से जुड़ कर देश और समाज की सेवा की ओर उन्मुख हुए। 1950 में बीएचयू से धातु इंजीनियरिंग में स्नातक सिंहल ने जीवन को आरएसएस के प्रति समर्पित किया। संघ ने उन्हें विराट हिंदु सम्मेलनों का दायित्व सौंपा। इस भूमिका में वे पहले से ही अपना लोहा मनवा चुके थे। हालांकि उनका श्रेष्ठतम आना बाकी था और यह 1984 में मंदिर आंदोलन के साथ बयान हुआ। कुछ ही वर्षों में यदि मंदिर आंदोलन परवान चढ़ा तो सिंहल के नेतृत्व का डंका भी बजा। मंदिर आंदोलन 1989 से 92 तक चरम के उस दौर से गुजरा, जब सिंहल के आवाहन पर लाखों मंदिर समर्थक बराबर जुटते रहे। हालांकि ढांचा ध्वंस के बाद मंदिर निर्माण की लंबी होती प्रतीक्षा के चलते मंदिर आंदोलन का ताप कम पड़ गया, पर सिंहल पूरी गंभीरता से अपने प्रयास में लगे रहे। उनके लिए राममंदिर और राष्ट्रमंदिर एक ही सिक्के के दो पहलू थे और उनकी हर पहल पर इस अवधारणा की छाप थी। विहिप में उनके नायब माने जाने वाले डॉ. प्रवीण तोगड़िया ने धुर हिन्दुत्व के नाम पर नरेन्द्र मोदी की आलोचना शुरू की तो सिंहल ने उनसे भी दूरी बना ली और सिंहल के मुंह मोड़ने की वजह से ही वह दिन भी आ गया जब तोगड़िया की विहिप से छुट्टी हो गई। मंदिर निर्माण का स्वप्न संजोए सिंहल 17 नवम्बर 2015 को चिरनिद्रा में लीन हो गए। विहिप के प्रांतीय प्रवक्ता शरद शर्मा कहते हैं, काश आज सिंहल जी होते। उन्होंने रामजन्मभूमि मुक्ति का जो स्वप्न देखा उसे चन्द वर्षों में करोड़ों रामभक्तों के जेहन में स्थापित हो गया और आज यह स्वप्न साकार हुआ है।

ऋतंभरा : सेवा से आन्दोलन तक

यूं तो अनाथ बालिकाओं के लिए वात्सल्य ग्राम जैसा प्रकल्प संचालित करने के कारण साध्वी ऋतंभरा सामाजिक कार्यों के लिए पहचानी जाती है, लेकिन मन्दिर मन्दिर आन्दोलन में वे सबसे चमकदार किरदारों में एक थी। उनके भाषणों के ऑडियो कैसेट ने घर–घर आन्दोलन पहुंचाया। लिब्रहान आयोग ने उन्हें भी इस मामले का प्रमुख अभियुक्त बनाया। छह दिसम्बर को उनके साथ ही रामकथा कुंज के मंच पर आसीन रहे हनुमानगढ़ी से जुड़े महंत मनमोहन दास बताते हैं कि आन्दोलन में साध्वी ऋतंभरा के ही भाषण थे, जिन्होंने लोगों में चेतना जगाई।

परमहंस : मंदिर आंदोलन के चेहरा बने

मंदिर–मस्जिद विवाद एक युग की तरह है। इसे पात्र गढ़ते रहे और यह पात्रों को गढ़ता रहा। रामचन्द्रदास परमहंस इस सच्चाई–समीकरण के पर्याय हैं। छपरा जिला के भगेरन तिवारी का युवा बेटा चन्द्रेश्वर अपनी यायावरी के चलते 1930 में अयोध्या आया और यहीं का होकर रह गया। यहीं के गुरू परमहंस रामकिंकरदास ने दीक्षा के साथ नया नाम भी दिया। चन्द्रेश्वर अब रामचन्द्रदास हो गए थे। जल्दी ही उनका साबका उस स्थल से पड़ा, जिसे श्रद्धालु रामजन्मभूमि मानते थे और दूसरा पक्ष उसे मस्जिद कहता था। युवा परमहंस के लिए यह असहनीय था कि उनके आराध्य भव्य मंदिर में न विराजें। छह दिसम्बर 1992 से पूर्व 1934 में भी विवादित ढांचे को क्षति पहुंचाई गई थी और इस मुहिम में पहमहंस भी शामिल थे।

हालांकि तब परमहंस की उनकी उपाधि पक्की नहीं हुई थी। आयुर्वेदाचार्य की डिग्री लेकर अयोध्या आए रामचन्द्रदास को पहमहंस उपाधिधारी होने में कुछ वर्ष लग गए। हरफनमौला परमहंस जितने

प्रखर शास्त्र एवं साधना के तल पर थे, उतने ही प्रखर सामाजिक दायित्वों के प्रति भी थे। उनकी पहचान लोगों के सहायक के साथ सभी–समारोहों के शानदार वक्ता की बनी।....और गुरू परंपरा से प्रसाद स्वरूप मिली परमहंस की उपाधि समाज में भी स्वीकृत–शिरोधार्य हुई। 1949 में रामलला के प्राकट्य तक वे परिपक्व हो चले थे और इस दौरान उन्होंने पूरी परिपक्वता का परिचय भी दिया। प्राकट्य के साथ रामलला की उसी स्थल पर स्थापना के लिए परमहंस दृढ़ नायक की तरह सामने आए। पांच दिसम्बर 1950 को स्थानीय कोर्ट में वाद दायर कर भी रामलला के पूजन एवं दर्शन का अधिकार मांगा। 1948 में मन्दिर की दावेदारी को जनान्दोलन का रूप देने के लिए आगे आई विहिप की भी वे पहली पसंद बने और कुछ ही दिनों में मन्दिर आन्दोलन का चेहरा बनकर स्थापित हुए। नई दिल्ली की जिस धर्मसंसद में गठित रामजन्मभूमि मुक्ति यज्ञ समिति संघर्ष का प्रस्ताव पारित किया, उसकी अध्यक्षता रामचन्द्रदास परमहंस ने ही की थी। 1990 में परमहंस ने गोलियों की बौछार की परवाह किए बगैर कारसेवकों को बचाने का प्रयास कर स्नेहिल संरक्षक की पहचान पुख्ता की। रामजन्मभूमि न्यास अध्यक्ष की जिम्मेदारी मिलने के साथ उनका कद और व्यापक हुआ। विवादित ढांचा ध्वंस के एक दशक बाद जब विहिप नेतृत्व के सामने मन्दिर निर्माण से जुड़ी अपेक्षाओं पर खरा उतरने का दबाव बढ़ा तब परमहंस पुनः संकटमोचक बनकर आगे आए। 94 वर्ष की उम्र में मन्दिर निर्माण शुरू न हो पाने की स्थिति में आत्महत्या का एलान किया। परमहंस जैसे दिग्गज के सामने दबाव में आई तत्कालीन केन्द्र सरकार ने बीच का रास्ता निकाला और प्रधानमंत्री कार्यालय में अयोध्या सेल के प्रभारी एवं वरिष्ठ आइएएस अधिकारी शत्रुध्न सिंह को परमहंस को मनाने के लिए विशेष दूत के रूप में भेजा गया। परमहंस दृढ़ तो थे, पर अड़ियल नहीं थे। उन्होंने शत्रुध्न सिंह को शिलादान कर यह संदेश दिया कि विहिप मन्दिर निर्माण के प्रयास में लगी है। हालांकि वे इन प्रयासों को फलीभूत होते नहीं देख सके। 31 जुलाई 2003 को परमहंस ने अन्तिम श्वांस ली।

मुकदमे के महत्वपूर्ण शिल्पी

न्यायमूर्ति देवकीनन्दन अग्रवाल ने रामलला विराजमान को पक्षकार बनाने की याचना की थी। राम मन्दिर पर सुप्रीम कोर्ट का फैसला आने के बाद न्यायमूर्ति देवकीनन्दन अग्रवाल और वकील गोपाल सिंह विशारद् इस मुकदमे के महत्वपूर्ण शिल्पी साबित हुए। इलाहाबाद हाईकोर्ट के सेवानिवृत्त जज अग्रवाल ने रामलला नाबालिग के निकट मित्र के रूप में मुकदमा दायर कर रामलला विराजमान को पक्षकार बनाने की याचना की थी। कानूनविद् अग्रवाल ने मन्दिर में स्थापित प्राण प्रतिष्ठित मूर्ति को जीवित इकाई बताते हुए उनकी ओर से मुकदमा लड़ने के लिए स्वयं को अधिकृत माना था। इसी के बाद न्यायालय ने रामलला का मुकदमा लड़ने के लिए अग्रवाल को रामलला के अभिन्न सखा के रूप में मान्यता दी थी। आज के फैसले में सुप्रीम कोर्ट ने भी रामलला विराजमान मूर्ति को एक व्यक्ति माना है। अग्रवाल ने रामलला विराजमान की ओर से एक जुलाई 1989 को मुकदमा दायर किया था।

मेरोपंत पिंगले : जिन्होंने राममन्दिर निर्माण आंदोलन को बनाया देशव्यापी

अयोध्या में भव्य राम मन्दिर निर्माण के आन्दोलन की संकल्पना के शिल्पकार के रूप में मोरोपंत पिंगले का प्रमुख किरदार रहा। इस आन्दोलन को उन्होंने न सिर्फ देशव्यापी बनाने की दिशा दी, बल्कि रामशिलाओं के जरिये इसे घर–घर तक पहुंचाया। मोरोपंत महाराष्ट्र के चित्तपावन ब्राह्मण थे। उन्होंने रणनीति के तहत प्रस्तावित मन्दिर के लिए तीन लाख ईटें देश के हर गांव में पूजित कराईं। फिर गांव से तहसील तथा इसके बाद जिला एवं राज्य मुख्यालय होते हुए ये ईंटें अयोध्या लाई गई। इस दौरान आन्दोलन न सिर्फ सर्वस्पर्शी बना, बल्कि इसकी व्यापकता भी बढ़ी। शिलापूजन के दौरान देश भर के तकरीबन छह करोड़ लोगों की भावनाएं सीधे मन्दिर आन्दोलन से जुड़ीं। जैसे–जैसे गांवों पिंगले के नेतृत्व में शिलाओं का पूजन होता गया, राममन्दिर

आन्दोलन व इसके निर्माण की भावनाएं भी प्रगाढ़ होती चली गई।

शिलापूजन, शिलान्यास, चरण पादुका, राम ज्योति यात्राएं, ये सब पिंगले की रणनीति व चिंतन की उपज थीं। इतना कुछ होने के बावजूद पिंगले हमेशा पर्दे के पीछे थिंक टैंक के रूप में अपनी भूमिका निभाते रहे। आरएसएस के पहले सरसंघ चालक डॉ. हेडगेवार के निकट रह कर पिंगले ने सांगठनिक गुणों को आत्मसात किया और उन्हें जमीनी स्तर पर उतारा। उन्होंने सरसंघ चालक से यह भी सीखा कि संगठन को कैसे विस्तार दिया जाता है। इसके सूच कैसे प्रतिपादित किए जाते हैं।

ओंकार भावे : कई मोर्चो पर नेतृत्व क्षमता की अमिट छाप छोड़ी

ओंकार भावे विहिप के कोर ग्रुप के शीर्ष नेताओं में थे। अयोध्या में रामजन्मभूमि पर भव्य मंदिर निर्माण के लिए शुरू हुए आन्दोलन में उन्होंने न सिर्फ बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया, बल्कि कई मोर्चो पर नेतृत्व क्षमता की अमिट छाप भी छोड़ी। वे विहिप के अर्न्तराष्ट्रीय उपाध्यक्ष रहे। इस पद पर कार्य करते हुए भावे ने अपनी सांगठनिक कुशलता को कई बार प्रतिष्ठित किया। समय–समय पर उन्होंने विहिप के रचनात्मक आन्दोलन व प्रमुख कार्यो को संपादित करते हुए उन्होंने राममन्दिर आन्दोलन को देशभर में धार दी। इसे लेकर कई बार देश व्यापी प्रवास भी किया। मन्दिर आन्दोलन के पहले भावे ने देश में आपातकाल के दौरान संघर्ष किया। ओंकार भावे की गिनती राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारकों में होती थी।

भावे का जन्म आजमगढ़ में 1924 में हुआ था। स्नातक की पढ़ाई प्रयाग विश्वविद्यालय से की। यहीं से लॉ की डिग्री हासिल की। वे बचपन में ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संपर्क में आए। 1945 में संघ के प्रचारक के रूप में पारी शुरू की। प्रचारक बनने के बाद उन्होंने संघ में कई अहम दायित्वों का निर्वहन किया। पहले जिला प्रचारक, फिर विभाग प्रचारक और प्रांत प्रचारक रहे। पूर्वी उत्तर प्रदेश के शारीरिक प्रमुख की जिम्मेदारी निभाई। 1995 में वे विहिप के संयुक्त महामंत्री बनाए गए। 2009 में उन्हें अंतरराष्ट्रीय उपाध्यक्ष नियुक्त किया गया। बीमारी की वजह से 23 जुलाई को 2009 को उन्होंने अन्तिम सांस ली।

गिरिराज किशोर : देश ही नहीं विदेश में भी स्थापित किया संगठन

आचार्य गिरिराज किशोर मन्दिर आन्दोलन का बड़ा चेहरा थे। आचार्य गिरिराज किशोर ने विश्व हिन्दू परिषद में कई अहम जिम्मेदारियों का निर्वहन किया। वे श्रीराम जन्मभूमि आन्दोलन के समय से परिषद से जुड़े थे। वे श्रीराम जन्मभूमि आन्दोलन के समय से परिषद से जुड़े थे। गिरिराज किशोर ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक के रूप में भी कार्य किया। श्रीराम जन्मभूमि आन्दोलन जैसे–जैसे आगे बढ़ा, वे प्रमुख चेहरे के रूप में पहचाने गए। प्रचारक के नाते मैनपुरी, आगरा, भरतपुर, धौलपुर में भी कार्य किया। 1948 में संघ पर प्रतिबंध लगने पर वे मैनपुरी, आगरा, बरेली तथा बनारस की जेल में 13 महीने तक बन्द रहे। छूटने के बाद संघ के कार्य के साथ आचार्य ने स्नातक इतिहास, हिन्दी व राजनीति शास्त्र से किया। फिर एसए की पढ़ाई पूरी की। 1949 से 58 तक वे उन्नाव, आगरा, जालौन तथा उड़ीसा में प्रचारक रहे। वह अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद में राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रहे। संगठन मंत्री भी बने। उन्होंने दिल्ली में रह कर परिषद को मजबूत किया। दिल्ली विश्वविद्यालय में पहली बार विद्यार्थी परिषद के प्रत्याशी के रूप में अध्यक्ष निर्वाचित हुए। आपातकाल में वे 15 महीने भरतपुर, जोधपुर और जयपुर जेल में रहे। वे विहिप के कार्य से इंग्लैंड, हालैंड, बेल्जियम, फ्रांस, स्पेन, जर्मनी, रूस, नार्वे, स्वीडन, डेनमार्क, इटली, मॉरिशस, मोरक्को, गुयाना, नैरोबी, श्रीलंका, नेपला, भूटान, सिंगापुर, जापान, थाइलैंड भी गए। आचार्य गिरिराज किशोर का निधन 94 वर्ष की आयु में 2014 में हुआ।

सुबूत पर टिका है सुप्रीम कार्ट का फैसला : के. के. मुहम्मद

कोझिकोड (केरल), एएनआइ : भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआइ) के पूर्व क्षेत्रीय निदेशक (उत्तम)

के.के. मुहम्मद ने शनिवार को अयोध्या मामले में सुप्रीम कोर्ट के फैसले का स्वागत करते हुए उसे एकदम 'सही निर्णय' बताया। उन्होंने कहा, 'अदालत ने एएसआइ द्वारा प्रस्तुत सुबूतों के आधार पर फैसला दिया है। जहां तक मैं सोच सकता हूँ यह एकदम सही फैसला है। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि फैसला इतना सही होगा। मैं दोषमुक्त महसूस कर रहा हूँ (जब मैंने कहा था कि मस्जिद से पहले वहां राम मन्दिर मौजूद था), कुछ लोग मेरे पीछे पड़ गए थे। जैसा हम सभी चाहते थे, यह फैसला वैसा ही है।'

वाह! इकबाल भाई...आप पर नाज करती है रामनगरी

सुबह के दस बज रहे हैं। आधे घंटे बाद अयोध्या विवाद का ऐतिहासिक फैसला आने वाला है। कोटिया मोहल्ले में रहने वाले बाबरी मस्जिद के पक्षकार इकबाल अंसारी का घर सुरक्षा एवं मीडिया कर्मियों से घिरा हुआ है। घर का दरवाजा अभी बंद है। बाहर खड़े मुस्लिम समुदाय के कुछ युवक यह कह कर रोकते हैं कि वह अभी खाना खा रहे हैं। थोड़ी देर में मुलाकात हो सकती है। कुछ मीडियाकर्मी इकबाल के सुरक्षाकर्मियों के साथ बैठ कर उनके घर के बाहरी हिस्से में टीवी पर फैसले का अपडेट निहार कर अपनी–अपनी राय देने में जुटे हैं। आधे से ज्यादा फैसले का रुझान आ चुका है। अब जरूरत है, इस विवाद से जुड़ी महत्वपूर्ण शख्सियत इकबाल अंसारी के बयान की। मीडिया कर्मियों की उत्सुकता उनका बयान लेने के लिए बढ़ती जा रही...। एक मीडियाकर्मी बोल पड़ता है...इकबाल भाई बाहर आइए..। दस बजकर 50 मिनट पर सिर पर लाल टोपी लगाए वह बाहर आते हैं...। लो..इकबाल भाई आ गए...। मीडिया कर्मियों का हुजूम उन्हें घेर लेता है। अंगरक्षक मीडिया कर्मियों को हटाने की मशक्कत करते हुए इकबाल को एक कुर्सी पर बैठा देते हैं। इकबाल कहते हैं कि सभी से बात करूंगा, धक्का–मुक्की न करो। मीडिया कर्मियों के कैमरे चमकने लगते हैं। इकबाल के घर के बाहर आम लोगों की भी काफी भीड़ है। लोक इकबाल की बात सुनने के लिए आतुर हैं। आखिर इस मुद्दे पर वह क्या बोलते हैं। यकीन मानिये, इकबाल ने जो बोला उसे लेकर रामनगरी सदियों तक उनका शुक्रिया अदा करेगी। अपने वालिद मरहूम हाशिम अंसारी की तरह ही इकबाल ने भी देश की न्याय व्यवस्था पर विश्वास जताते हुए रामनगरी का दिल जीत लिया। इकबाल ने कहा कि वह फैसले से संतुष्ट हैं। अब इसको लेकर कहीं दावेदारी नहीं करेंगे। इकबाल का एक–एक शब्द देश की न्याय व्यवस्था के प्रति आस्था की इबारत लिख रहा था। इकबाल ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की तारीफ की। फैसले को लेकर इकबाल ने दोनों पक्षों से शान्ति बनाने की अपील की तो पूरा मोहल्ला तालियों से गूंज उठा। मन्दिर–मस्जिद विवाद के पटाक्षेप की घड़ी में कोटिया मुहल्ले से शान्ति–सद्भाव का जो पैगाम मिला, उसे सुन कर मानों रामनगरी कह रही हो कि इकबाल भाई आप पर नाज है।

रविप्रकाश श्रीवास्तव

भीड़ हमेशा उस रास्ते पर चलती है जो रास्ता आसान लगता है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं की भीड़ हमेशा सही रास्ते पर चलती है। अपने रास्ते खुद चुनिए क्योंकि आपको आपसे बेहतर और कोई नहीं जानता।

अटल ने रात में ब्रह्मदत्त को क्यों भेजा अयोध्या

भाजपा के वरिष्ठ नेता राजेन्द्र तिवारी बताते हैं कि अमीनाबाद की सभा के बाद अटल बिहारी वाजपेयी ने उस समय प्रदेश सरकार में ऊर्जा मंत्री ब्रह्मदत्त द्विवेदी को अयोध्या भेजा। ब्रह्मदत्त द्विवेदी पहले राजस्व मंत्री थे। उन्होंने ही अयोध्या में राम कथाकुंज के लिए जमीन अधिग्रहण का पूरा प्रस्ताव बनाया था। प्रदेश के बड़े वकीलों में गिने जाने वाले ब्रह्मदत्त फैजाबाद के प्रभारी भी थे और अटल बिहारी वाजपेयी के काफी विश्वसनीय लोगों में भी। ब्रह्मदत्त द्विवेदी के जरिये अटल जी ने अयोध्या में मौजूद लोगों को शान्ति का संदेश भेजा था। पर, कुछ लोग नहीं माने। हालांकि सूत्रों की मानें तो श्रीराम जन्मभूमि मामले में प्रदेश में भाजपा के रणनीतिकारों में शामिल द्विवेदी संबंधित स्थल से कुछ महत्वपूर्ण अभिलेख लेने गए थे। जिनका भविष्य में कानूनी उपयोग किया जा सके।

तत्कालीन जिलाधिकारी के.के. नैयर ने रोक दिया था नेहरू को अयोध्या आने से

केरल के रहने वाले के के नैयर आईसीएस अधिकारी थे। वह गोण्डा के जिलाधिकारी थे। वहीं से उनका फैजाबाद आना–जाना शुरू हुआ। उन्हें बलरामपुर के राजा ने बताया कि अयोध्या में किस तरह मन्दिर तोड़कर मस्जिद बनाई गई। कहा जाता है कि इस जानकारी के बाद वह जब भी ढांचे को देखते तो अपने लोगों से मन्दिर तोड़कर मस्जिद बनाने पर पीड़ा जताते। जून 1949 को उनका फैजाबाद स्थानांतरण हुआ।

सम्बन्धित स्थल पर जब मूर्तियां रखी गई तो यही फैजाबाद के जिलाधिकारी थे। मूर्तियां रखे जाने की खबर पर तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री गोविन्द बल्लभ पंत से मूर्तियां हटवाने को कहा, लेकिन नैयर ने पंत सरकार को लिखित रूप से भेज दिया कि इससे वहां दंगा भड़क जाएगा। नेहरू ने अयोध्या आने के लिए पंत को टेलीग्राम किया। पर, के के नैयर ने सुरक्षा कारणों से प्रधानमंत्री को आने की अनुमति नहीं दी। इसके बाद नेहरू ने फिर पंत को अयोध्या आने के लिए लिखा। पर, सरकार ही चुप्पी साथ गई। जिस पर नेहरू ने फिर नाराजगी में पंत को मूर्तियां नहीं हट सकती। उससे पहले मुझे हटाना पड़ेगा। इसके बाद नैयर ने खुद त्यागपत्र दे दिया। त्यागपत्र देने के बाद वह बहराइच से और उनकी पत्नी शकुंतला नैयर कैसरगंज से जनसंघ की सांसद भी चुनी गईं।

ठाकुर गुरुदत्त की भी भूमिका कम नहीं :

नैयर जब जिलाधिकारी थे तो ठाकुर गुरुदत्त सिटी मजिस्ट्रेट होकर आए। उन्होंने भी जब इस स्थल को देखा तो उन्हें भी ग्लानि होने लगी। भाजपा के वरिष्ठ नेता विंध्यवासिनी कुमार बताते हैं कि जब नेहरू तुष्टीकरण की नीति पर चलते हुए मूर्तियां हटवाने पर अड़ गए और किसी भी कीमत पर यह करने की निर्देश मुख्यमंत्री को दिया तो प्रशासनिक मशीनरी सक्रिय हो गई। वैसे भी वर्षों पर पहले मन्दिर की जगह जबरन मस्जिद बनाए जाने से आहत लोग रोष में थे। तनाव हो गया। जिस पर गुरूदत्त सिंह ने बुद्धिमानी दिखाते हुए इस स्थान को 145–146 के तहत कुर्क कर लिया और इस पर प्रशासन का ताला लगवा दिया। जिससे यह मामला अदालत में चला गया और नेहरू की मंशा पूरी न हो पाई।

पावन स्मृति

(पुण्य भूमि भारत में जन्म लेकर जिन्होंने जीवन पर्यन्त मानव की सेवा और मानवता की रक्षा में अपना सर्वस्व समर्पित कर कीर्तिमान स्थापित किया, अपने बहुआयामी कार्यों द्वारा जीवन के विविध क्षेत्रों में आलोक स्तम्भ बनकर हमारा मार्ग दर्शन किया तथा जो आज भी हमारे प्रेरणा स्रोत हैं ऐसे उन तमाम दिव्य महापुरुषों की पावन स्मृति में श्रद्धा सुमन समर्पित है–सम्पादक)

दिनांक	दिवस	महापुरुष का नाम
1 दिसम्बर	जन्म–दिवस	सुमन एक उपवन के द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी
3 दिसम्बर	जन्म–दिवस	आत्मविश्वास के धनी : राजेन्द्र बाबू
4 दिसम्बर	जन्म–दिवस	नव दधीचि : नाना भागवत
5 दिसम्बर	पुण्य–तिथि	यशस्वी व्यक्तित्व के धनी श्री उत्तमचन्द्र इसराणी
6 दिसम्बर	इतिहास–स्मृति	राष्ट्रीय कलंक का परिमार्जन
8 दिसम्बर	जन्म–दिवस	मानवतावादी कवि बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'
9 दिसम्बर	जन्म–दिवस	झण्डा ऊँचा रहे हमारा
10 दिसम्बर	बलिदान–दिवस	सोनारवान का हुतात्मा वीर नारायण सिंह
11 दिसम्बर	जन्म–दिवस	कर्मठ कार्यकर्त्ता : श्री बालासाहब देवरस
12 दिसम्बर	बलिदान–दिवस	महान सेनानी जनरल जोरावर सिंह
12 दिसम्बर	बलिदान–दिवस	बाबू गेनू का बलिदान : स्वदेशी दिवस
13 दिसम्बर	पुण्य–तिथि	कैलास पीठाधीश्वर स्वामी विद्यानन्द गिरि
14 दिसम्बर	जन्म–दिवस	श्रेष्ठ नाटककार : उपेन्द्रनाथ
15 दिसम्बर	इतिहास–स्मृति	राष्ट्रीय अपमान का बदला साण्डर्स वध
17 दिसम्बर	पुण्य–तिथि	एक कर्मयोगी राजनेता : कृष्णलाल शर्मा
18 दिसम्बर	जन्म–दिन	भोजपुरी के अमर नाटककार भिखारी ठाकुर
19 दिसम्बर	बलिदान–दिवस	काकोरी काण्ड के नायक पण्डित रामप्रसाद बिस्मिल
19 दिसम्बर	बलिदान–दिवस	अमर बलिदानी अशफाक उल्ला खाँ
19 दिसम्बर	बलिदान–दिवस	अमर हुतात्मा रोशनसिंह
20 दिसम्बर	पुण्य–तिथि	राष्ट्रसन्त श्री गाडगे बाबा
22 दिसम्बर	जन्म–दिवस	महान गणितज्ञ : श्रीनिवास रामानुजन्
23 दिसम्बर	बलिदान–दिवस	परावर्तन के अग्रदूत : स्वामी श्रद्धानन्द
23 दिसम्बर	पुण्य–तिथि	विस्मृत विप्लवी : गणेश घोष
24 दिसम्बर	जन्म–दिवस	भारत रत्न : सीमान्त गान्धी
25 दिसम्बर	जन्म–तिथि	हिन्दुत्व के आराधक महामना मदनमोहन मालवीय
26 दिसम्बर	जन्म–तिथि	वनयोगी बालासाहब देशपाण्डे
27 दिसम्बर	जन्म–दिवस	क्रान्तिकारी शचीन्द्रनाथ बख्शी
28 दिसम्बर	बलिदान–दिवस	राव रामबख्श सिंह का बलिदान
28 दिसम्बर	जन्म–तिथि	दूरदर्शन पर रामायण के प्रचारक रामानन्द्र सागर
30 दिसम्बर	बलिदान–दिवस	वीर उक्यांग नागव
30 दिसम्बर	जन्म–दिवस	सम्पादकाचार्य पण्डित अम्बिका प्रसाद वाजपेयी
31 दिसम्बर	जन्म–तिथि	श्रमिक हित को समर्पित रमण भाई शाह

राम मंदिर आंदोलन में तीन पीढ़ी से सक्रिय है गोरक्षपीठ

तारीखी तस्वीरें : ताला खुलने से लेकर विवादित ढांचा गिराए जाने तक

1986 | 1989 | 1990 | 1992

मूर्ति रखवाने से लेकर ढांचा विध्वंस तक में रही है अहम भूमिका :

अयोध्या विवाद पर शनिवार को देश की सबसे बड़ी अदालत ने फैसला सुना दिया। यह फैसला उस समय आया, जब उत्तर प्रदेश की कमान योगी आदित्यनाथ के हाथ में है। यह संयोग है कि राम जन्मभूमि आंदोलन में जब भी कोई अहम पड़ाव आया, तो उसमें गोरक्षपीठ की अहम सहभागिता दिखी। सुप्रीम कोर्ट का यह फैसला रामजन्मभूमि आंदोलन में सबसे महत्वपूर्ण पड़ाव है और ऐसे समय में प्रदेश के सीएम गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ हैं।

पहला पड़ाव :– मंदिर आंदोलन की शुरुआत ही गोरक्षपीठाधीश्वर रहे महंत दिग्विजय नाथ ने गोरखनाथ मंदिर से ही की थी। महंत दिग्विजयनाथ उन चंद शख्सियतों में थे, जिन्होंने वहां राममंदिर निर्माण की कल्पना की थी। विहिप के वरिष्ठ नेता रहे महेंद्र वर्मा बताया करते थे कि विवाद का सबसे जरूरी पड़ाव 23 दिसंबर 1949 की सुबह उस समय आता है, जब विवादित जमीन पर बने मुख्य गुंबद के ठीक नीचे वाले कमरे में रामलला की मूर्तियां प्रकट हुई थीं। 22/23 दिसंबर 1949 की रात रामलला की मूर्तियां रामचबूतरा से उठाकर वहां स्थापित की गई थीं और जब रामलला का प्रकटीकरण हुआ, उस दौरान वहां महंत दिग्विजयनाथ कुछ साधु–संतों के साथ भजन कीर्तन कर रहे थे। उस समय आंदोलन की कमान हिंदू महासभा के विनायक दामोदर सावरकर और महंत दिग्विजय नाथ के हाथ में भी।

दूसरा पड़ाव : महंत दिग्विजय सिंह के निधन के बाद इस आंदोलन को उनके शिष्य मंहत अवैद्यनाथ ने धार दी। 29 दिसंबर 1949 को विवादित जमीन पर कोर्ट के आदेश से ताला लगा। इमारत एक रिसीवर को सौंप दी गई थी, जिसे रामलला की पूजा की जिम्मेदारी दी गई थी। इसके बाद अधिवक्ता उमेश चंद्र पांडेय की अपील पर फैजाबाद के तत्कालीन जिला जज कृष्णमोहन पांडेय ने एक फरवरी 1986 को विवादित परिसर का ताला खोलने का आदेश दिए। जब वह ताला खोला गया, उस वक्त गोरक्षपीठाधीश्वर महंत अवैद्यनाथ वहां मौजूद थे। महंत अवैद्यनाथ आजीवन श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति यज्ञ के अध्यक्ष रहे। महंत अवैद्यनाथ के दिगंबर अखाड़े के महंत रामचंद्र परमहंस के बहुत करीबी थे। उस समय राम जन्मभूमि मंदिर आंदोलन की रूपरेखा महंत अवैद्यनाथ और महंत रामचंद्र परमहंस की मंत्रणा पर ही तय होती थी।

तीसरा पड़ाव : 6 दिसंबर 1992 को अयोध्या में विवादित ढांचा गिराए जाने की रणनीति के पीछे भी महंत अवैद्यनाथ की ही भूमिका मानी जाती है। छह दिसंबर 1992 को अयोध्या में जो हुआ, उसकी रणनीति का खुलासा महंत अवैद्यनाथ ने उससे तीन साल पहले 1989 में विहिप की इलाहाबाद में हुई धर्म संसद बोलते हुए किया था। महंत अवैद्यनाथ के निधन के बाद उनके उत्तराधिकारी योगी आदित्यनाथ ने इस आंदोलन को आगे बढ़ाया। वह कहते रहे हैं कि 'राम मंदिर उनके जीवन का मिशन है, यह कोई चुनावी मुद्दा नहीं है।'

मैं राम जन्मभूमि की भीख मांगता हूँ : एक बार

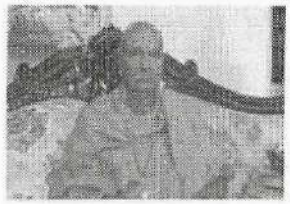

स्वामी सत्यमित्रानन्द भी वार्तालाप में थे। दोपहर का समय था, शुक्रवार का दिन था, नमाज का समय हो गया था। मुस्लिम पक्ष के महानुभाव नमाज पढ़कर जब वापस लौटे तो स्वामी सत्यमित्रानन्द ने खड़े होकर अपना वस्त्र फैलाकर कहा कि नमाज के बाद जकात करनी चाहिए। मैं श्रीराम जन्मभूमि की भीख मांगता हूँ। सब चुप रहे।

फैसले के बाद सभी आनन्द में हैं : महंत

नृत्यगोपाल दास, अध्यक्ष, श्रीराम जन्मभूमि न्यास, उन चुनिंदा लोगों में हैं, जिनका राम मंदिर से सरोकार शीर्ष धर्माचार्य के रूप में ही नहीं, बल्कि मंदिर आंदोलन के नायक की भी भूमिका में रहा है। वह उस पीढ़ी के प्रतिनिधि हैं, जिसने साढ़े तीन दशक पूर्व मंदिर आदोलन का आगाज किया और समय–समय पर आंदोलन की अगुआई की। आंदोलन के साथ महंत नृत्यगोपाल दास भी अनेक मोड़ से गुजरे। कई बार आंदोलन के साथ सफलता को लेकर संशय भी पैदा हुआ, पर महंत नृत्यगोपाल दास अपने मिजाज के अनुरूप पुरी दृढ़ता से रामजन्मभूमि की मुक्ति के साथ मंदिर निर्माण का स्वप्न साकार करने में लगे रहे। आज जब यह आंदोलन अंजाम तक पहुंच गया हैं, वह आनन्द से विभोर हैं। महंत नृत्यगोपाल दास से दैनिक जागरण के रमाशरण अवस्थी ने विस्तार से बात की।

मन्दिर में विराजे रामलला

भव्य मन्दिर निर्माण होने तक उचित यह होगा कि रामलला को ऐसे मन्दिर में स्थापित किया जाए, जहाँ रामलला की रीति–नीति और वैभव से पूजा–अर्जना हो सके।

(स्वामी रामदिनेशाचार्य)

रामलला के वैकल्पिक मन्दिर का निर्माण शीघ्र सुनिश्चित होना चाहिए और उनकी सेवा–पूजा पूरी भव्यता से शुरू हो।

(महंत रामचन्द्रदास, निष्काम सेवा ट्रस्ट)

जल्द ही तय होना चाहिए कि रामलला की पूजा गरिमा के अनुरूप हो। निकट भविष्य में भव्य मन्दिर बनना तो तय ही है पर उससे पूर्व रामलला के लिए वैकल्पिक मन्दिर बने।

(संत रामभूषणदास कृपालु)

कोर्ट का फैसला आने के बाद रामलला को तंबू के कामचलाऊ मन्दिर से हटाकर वैकल्पिक मन्दिर में स्थापित किया जाए।

(राजूदास, हनुमानगढ़ी)

सरकार को भेजेंगे सुझाव : हमारी वर्षों की आस पूरी हुई है। सरकार अब अपना काम करेगी संत समाज अपना। हम मन्दिर की दिव्यता–भव्यता पर चर्चा कर इसकी रूपरेखा तैयार कर इसका सुझाव मोदी व योगी सरकार को भेजेंगे, ताकि अयोध्या का राम मन्दिर पूरे विश्व में अलौकिक है। राम व अयोध्या की गरिमा के अनुरूप इसका सौदर्य निखरे।

(महंत कमलनयन, मणिरामदास की छावनी के उत्तराधिकारी)

टेंट से अब भव्य मन्दिर में विराजेंगे हमारे आराध्य : फैसले से अयोध्या का सद्भाव मजबूत हुआ है। रामकोट 27 साल से बंदिशों का दंश झेल रहा था, लेकिन इस निर्णय न उस दर्द को भी भुलाने में मदद की है। अब हमारे आराध्य टेंट से बाहर आकर भव्य मन्दिर में विराजेंगे। हमें भी बंदिशों से मुक्ति मिलेगी। दिव्य–भव्य मन्दिर के प्रारूप पर हम संत समाज एक साथ बैठक चर्चा करेंगे।

(महंत रामशरण दास, रंगमहल मन्दिर)

पृथ्वी की पहली राजधानी में बने अतुलनीय मन्दिर : महाराज मनु ने अयोध्या को ही पृथ्वी की पहली राजधानी बनाया था। भगवान राम स्वयं कहते हैं कि **अवधपुरी मम प्रिय सो नाहिं....** (अवधपुरी के समान मुझे कोई दूसरी नगरी नहीं प्रिय है)। राम मन्दिर पर फैसला आने से अनादिकाल से चिर प्रतीक्षित आशा थी वह साकार हो गई। अब भव्य दिव्य मन्दिर में रामलला विराजमान होंगे। मन्दिर अतुलनीय हो।

(लक्ष्मण दास, अंर्तराष्ट्रीय कथाव्यास)

अयोध्या का भविष्य निखारेगा राम मन्दिर : राम

मन्दिर अब अयोध्या का भविष्य निखारेगा। यह रामलला पर मन्दिर बनने का उच्चस्तरीय निर्णय है। अब हिन्दु–मुस्लिम मिलकर अयोध्या का गौरव बढ़ाएं। मन्दिर दिव्य–भव्य बने इसकी कार्ययोजना तैयार होनी शुरू हो गई है। हम सभी केन्द्र सरकार की ओर आशा भरी नजरों से देख रहे हैं, ताकि जल्द मन्दिर बने।

(डॉ. रामविलास दास वेदांती, पूर्व सांसद)

अब भव्य राम मन्दिर की आस होगी पूरी : फैसला अत्यंत आह्लादित एवं हर्षित करने वाला है। अब हमारे रामलला का बनवास खत्म होने में कुछ ही दिन बाकी है। सरकार न्यास बनाने जा रही है। संत समाज भी सरकार को अनुपम मन्दिर निर्माण में पूरा सहयोग करेगा। भगवान राम का मन्दिर ऐसा होना चाहिए कि जो दर्शन करे वह देखता ही रह जाए, हमारी तैयारी शुरू हो चुकी है।

(डॉ. भरत दास)

घर तो जला पर रिश्ते नहीं : बाबरी मस्जिद ढहाए जाने के बाद हुए उपद्रव में कुछ लोगों ने बाबरी मस्जिद के मुद्दई स्व. हाशिम अंसारी के छोटे से घर में भी आग लगा दी थी। कुछ लोगों ने उनसे अयोध्या छोड़ने की बात कही। तब हाशिम ने जवाब दिया था घर जलने से रिश्ते नहीं जला करते। घर जलने की सूचना पर परमहंस रामचन्द्र दास ने लोगों को खूब गाली दी फिर घर बनवाने में काफी मदद की।

दोस्त तो चला गया, अब लड़ने में मजा नहीं आएगा : परमहंस रामचन्द्र दास श्रीराम जन्मभूमि और हाशिम अंसारी बाबरी मस्जिद का मुकदमा देखने एक साथ रिक्शे पर जाते थे। परमहंस का साकेतवास हुआ था हाशिम अंसारी उनके भाव पर फूट–फूट कर रोए और कहा था कि दोस्त चला गया अब लड़ने में मजा नहीं आएगा।

❑

व्रत-त्योहार, दिसम्बर 2019

दिनांक	दिन	व्रत–त्यौहार
1	रविवार	श्री पंचमी, द्वितीय नागपंचमी, श्रीरामविवाहोत्सव, एड्स दिवस
3	मंगलवार	सूर्य सप्तमी व्रत, ज्येष्ठा के सूर्य
4	बुधवार	बुधाष्टमी पर्व, नौसेना दिवस
5	गुरुवार	महानन्दा नवमी, कल्पादि नवमी
7	शनिवार	मौनी एकादशी–जैन
8	रविवार	मोक्षदा एकादशी व्रत, गीता जयंती
9	सोमवार	सोम प्रदोषव्रत, ग्यारहवीं शरीफ
10	मंगलवार	पिशाच मोचन श्राद्ध
11	बुधवार	पूर्णिमा व्रत, दत्तात्रेय प्राकट्योत्सव
12	गुरुवार	स्नान–दान की पूर्णिमा
15	रविवार	सं. गणेश चतुर्थी व्रत
16	सोमवार	मूल–धनु संक्रान्ति रात 12:37, खरमास प्रारम्भ, गुरु अस्त पश्चिम में
21	शनिवार	पौष दशमी, पार्श्वनाथ जयंती जैन
22	रविवार	सफला एकादशी व्रत सबका
23	सोमवार	सोम प्रदोष व्रत
24	मंगलवार	मास शिवरात्रि व्रत
25	बुधवार	श्राद्ध की अमावस्या, क्रिसमस–डे (बड़ा दिन)
26	गुरुवार	स्नान–दान अमावस्या, जोर मेल–पंजाब 3 दिन, सूर्य ग्रहण
27	शुक्रवार	चन्द्रदर्शन
29	रविवार	वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत
31	मंगलवार	नववर्ष की पूर्व संध्या

आस्था....श्रद्धा....सद्भाव....संयम से फैसले का स्वागत

मंहत गिरीश पति त्रिपाठी, तिवारी मन्दिर, अयोध्या

जिस संसदीय और संवैधानिक परंपरा से इस जटिल विवाद का हल होना चाहिए था, उस पर अमल होते देखना अत्यंत सुखद है।

मिथिला बिहारी दास, चित्रकूट, आश्रम, अयोध्या

हम ऐतिहासिक क्षण के साक्षी बने। इसके लिए भगवान श्रीराम और माननीय न्यायाधीशों को सलाम।

जगदगुरू रामदिनेशाचार्य, हरिधाम पीठ, अयोध्या

आखिरकार वह घड़ी आ गई, जिसकी राम भक्त सदियों से प्रतीक्षा कर रहे थे। इस अवसर की प्रसन्नता अवर्णनीय है।

राजकुमार दास अधिकारी, श्रीराम बल्लभाकुंज, अयोध्या

मेरे पास इस अवसर की प्रसन्नता व्यक्त करने के लिए शब्द नहीं है। इस अवसर पर पूर्वजों को आंसुओं के साथ श्रद्धांजलि देंगे, जिन्होंने राम मन्दिर के लिए अपने प्राण न्योछावर किए।

मोहन भागवत, संघ प्रमुख

सर्वोच्च न्यायालय ने देश की जनभावना, आस्था और श्रद्धा को न्याय दिया है। इस निर्णय को जय–पराजय की दृष्टि से नहीं देखना चाहिए। आगे बढ़ना चाहिए। अतीत की बातों को भुलाकर सभी को भव्य राममन्दिर का निर्माण करना है।

कल्बे जवाद, शिया धर्मगुरू

हम विन्रमता पूर्वक सुप्रीम कोर्ट के फैसले को स्वीकार करते हैं। मैं अल्लाह का शुक्रगुजार हूँ कि मुसलमानों ने इस फैसले को स्वीकार किया और विवाद अब समाप्त हो गया है। मुझे लगता है कि मामला अब खत्म होना चाहिए।

मौलाना सैयद अरशद मदनी, अध्यक्ष, जमीयत उलेमा–ए–हिन्द

सभी से आग्रह है कि इस निर्णय को हार–जीत की दृष्टि से न देखें और देश में अमन व भाई चारे के वातावरण को बनाए रखें। ये निर्णय हमारी अपेक्षा के अनुकूल नहीं हैं, लेकिन सुप्रीम कोर्ट सर्वोच्च संस्था है। संविधान से प्राप्त भाक्तियों का उपयोग करते हुए जमीयत ने आखिरी हद तक न्याय के लिए लड़ाई लड़ी।

नेत्र कुम्भ चिकित्सालय

सी-136, निराला नगर, लखनऊ

संचालन :- किंगजार्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय एवं अन्त्योदय हेल्थ मिशन 1 अप्रैल 2019 से 31 अक्टूबर 2019 तक लाभन्वित रोगी विवरण

	माह सितम्बर 2019 तक	माह अक्टूबर 2019	योग सत्र 19–20
नेत्र परीक्षण	2478	260	2738
चश्मा वितरण	1471	144	1615
मोतियाबिन्दु ऑपरेशन	42	11	53

भाऊराव देवरस सेवा न्यास स्वास्थ्य सेवा प्रकल्प

(अ) सुदूर ग्रामीण अंचल एवं शहरी क्षेत्र की 6 सेवा बस्तियों में स्वास्थ्य केन्द्रों का संचालन

1 अप्रैल 2019 से 31 अक्टूबर 2019 तक लाभन्वित रोगी विवरण

क्र.	सेवा केन्द्र	दिवस	माह सितम्बर 2019 तक में लाभान्वित रोगी	माह अक्टूबर 2019 में लाभान्वित रोगी	कुल लाभान्वित रोगी
1.	वेदान्त आश्रम, पपनामऊ	सोमवार	361	33	394
2.	सेवा समर्पण संस्थान बिन्दौवा	मंगलवार	1072	185	1257
3.	अम्बेदकरनगर	बुधवार	426	57	483
4.	51 शक्तिपीठ (बीकेटी)	गुरुवार	317	92	409
5.	अर्जुनपुर (बीकेटी)	शुक्रवार	00	00	00
6.	माधव सेवा आश्रम	शनिवार	215	52	267
	कुल लाभान्वित रोगी		**2391**	**419**	**2810**
(ब) माधवराव देवड़े स्मृति रुग्ण सेवा केन्द्र, सी-91, निरालानगर, लखनऊ					
1.	एलोपैथिक	प्रत्येक कार्यदिवस	4879	1028	5907
2.	होम्योपैथिक	प्रत्येक कार्यदिवस	3016	529	3545
	कुल लाभान्वित रोगी संख्या		**7895**	**1557**	**9452**
(स) रुग्ण सेवा केन्द्र, माधव सेवा आश्रम, लखनऊ					
1.	होम्योपैथिक	प्रत्येक कार्यदिवस	**2057**	**307**	**2364**
1 अप्रैल 2019 से 30 अक्टूबर 2019 तक			**कुल लाभान्वित रोगी सं.**		**14626**

माधव सेवा आश्रम रायबरेली रोड, लखनऊ में प्रान्तशः ठहरने वाले लाभान्वित बन्धुओं की संख्या

क्र.	सेवा केन्द्र	माह सितम्बर 2019 तक	माह अक्टूबर 2019 में	योग सत्र 19–20
1.	उत्तर प्रदेश	33263	6373	39636
2.	उत्तराखण्ड	278	24	302
3.	बिहार	24339	3227	27566
4.	झारखण्ड	3267	356	3623
5.	उड़ीसा	403	12	415
6.	मध्य प्रदेश	1829	404	2233
7.	छत्तीसगढ़	273	83	356
8.	राजस्थान/गुजरात	47	56	103
9.	महाराष्ट्र	00	127	127
10.	नेपाल	431	49	480
11.	दिल्ली/पंजाब/हरियाणा	48	37	85
12.	पश्चिम बंगाल	621	61	682
13.	अन्य प्रान्त	604	20	624
	योग	**65403**	**10829**	**76232**

भाऊराव देवरस सेवा न्यास

सी–91, निराला नगर, लखनऊ – 226020 (उ.प्र.)

फोन–फैक्स : 0522-4001837, 2789406, E-mail : bdsnyas@yahoo.co.in

सहकार निवेदन

पिछले 24 वर्षों में न्यास के सेवा कार्यों में जो उत्तरोत्तर वृद्धि हुयी है, उसमें किसी न किसी रूप में आपका ही स्नेह सहयोग रहा है। न्यास के पास आर्थिक संसाधनों की बहुत कमी है। न्यास द्वारा संचालित सेवा कार्य प्रभावित न हो अतः आयस्रोत को बढ़ाना होगा। न्यास द्वारा प्रस्थापित **कार्पस फण्ड** से प्राप्त होने वाली ब्याज राशि भी पूरी नहीं होती। अतएव लक्ष्य तक पहुँचने हेतु कार्पस फण्ड भी बढ़ाना होगा। समाज सेवा के क्षेत्र में गौरव को बढ़ाने वाले इस महत कार्य में जन-जन का सहयोग एवं सहकार अपेक्षित है। आप सभी उदारमना सेवाभावी महानुभावों के सहकार से ही यह न्यास सेवारत है।

न्यास के सेवा कार्यों हेतु आप इस प्रकार से सहयोग कर सकते हैं–

1. **सचल चिकित्सा सेवा के लिए**– रु. 11,000/- की मासिक धनराशि का सहयोग करके, एक सेवा बस्ती में अपनी ओर से निःशुल्क चिकित्सा सुविधा एवं औषधि का वितरण कराना।
2. **नेत्र चिकित्सा शिविर के लिए**– रु. 2000/- की धनराशि का सहयोग करके एक **मोतियाबिन्द पीड़ित** नेत्र रोगी का आपरेशन करवाकर नेत्र ज्योति प्रदान करना।
3. **विकलांग सहायता शिविर के लिए**– रु. 1,000/- से 6,000/- तक की राशि दे करके, एक विकलांग बन्धु की सहायता में उनके लिए कृत्रिम अंग, उपकरण, वैशाखी, ट्राईसाइकिल, ह्वील चेयर आदि की व्यवस्था कराना।
4. **कार्पस फण्ड (स्थायी निधि) के लिए**– रु. 10,000/- से अधिक की धनराशि का अर्पण करके, न्यास द्वारा संचालित सेवा कार्यों में उत्प्रेरक बनना।
5. **छात्रवृत्ति के लिए**– प्राथमिक रु. 3000/-, माध्यमिक रु. 5000/-, हाईस्कूल रु. 7000/-, इंटरमीडिएट रु. 8000/-, आईटीआई/डिप्लोमा रु. 10,000/-, स्नातक रु. 10000/-, परास्नातक रु. 12000/-, प्रतियोगी परीक्षाएँ रु. 15000/-, इंजीनियरिंग रु. 18000/- मेडिकल के छात्रों को रु. 20000/- की वार्षिक छात्रवृत्ति का सहयोग करके न्यास के माध्यम से पूर्वांचल और वनवासी क्षेत्र के बालकों के लिए वार्षिक छात्रवृत्ति भिजवाना।
6. **सेवा चेतना अर्द्धवार्षिक पत्रिका के लिए**– रु. 1,200/- की आजीवन सदस्यता ग्रहण करके तथा पत्रिका की विज्ञापन दरों के आधार पर अपनी क्षमतानुसार विज्ञापन के रूप में सहयोग करके सहायता करना।
7. **सेवा संवाद मासिक के लिए**– रु. 2,000/- की आजीवन एवं रु. 5,000/- की संरक्षक सदस्यता ग्रहण करके सहयोग करना।
8. **माधव सेवा आश्रम के लिए**– रु. 5,00,000/- का दान कर, एक कक्ष के निर्माण के द्वारा अपने किसी सम्बन्धी की स्मृति को स्थायी बनायें।

न्यास को सेवा कार्यों के लिए दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80G(5)(vi) के अन्तर्गत नियमानुसार करमुक्त है। अप्रवासी भारतीय भी दान दे सकते हैं। कृपया अपनी दानराशि चेक व ड्राफ्ट **भाऊराव देवरस सेवा न्यास** के पक्ष में जो **लखनऊ** में देय हो, अपने पैन नं. व पते के साथ भेज सकते हैं।

समाज सेवा-कार्यों हेतु आपसे अनुरोध है कि न्यास को यथा सम्भव अधिकाधिक सहयोग करें। दान की राशि आप सीधे हमारे खाते में भी जमा कर सूचित कर सकते हैं।

बैंक ऑफ इण्डिया, निरालानगर, लखनऊ बैंक खाता सं. **680610100009948 IFSC: BKID0006806**

भारतीय स्टेट बैंक, निरालानगर, लखनऊ बैंक खाता सं. **30448433657 IFSC: SBIN0003813**

आशा है सेवा के इस पुनीत कार्य में आप सभी अवश्य सहभागी बनेंगे।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय स्वास्थ्य सेवा केन्द्र

ग्राम परतोष, अमेठी (उ.प्र.)

अनुरोध

जिनकी कथनी और करनी में सदैव एकरूपता रही हो, जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन मातृभूमि के चरणों में अर्पित कर दिया हो, जो अकृत्रिमता से दूर, सहज, स्वाभाविक, सादा रहन-सहन और उच्च विचारों के धनी रहे हों, ऐसे समाज सेवी, कुशल संगठक, राष्ट्रभक्त श्रद्धेय पं. दीनदयाल उपाध्याय का जन्म 25 सितम्बर 1916 ई. को नगला चन्द्रभान, फरह, मथुरा (उ.प्र.) में हुआ था। बाल्यकाल से ही वे संवेदनशील रहे। उनके हृदय में समाज के निर्बल, पिछड़े, बनवासी, ग्रामीण, अनाश्रित, वृद्ध, अनपढ़-बालक, रोगी-पीड़ित सभी के प्रति मानवीय करुणा थी, उनके एकात्म मानव दर्शन और अन्त्योदय की भावना तथा समाज और राष्ट्र को समुन्नत करने के स्वप्न को साकार बनाने तथा आगे बढ़ाने की पवित्र भावना के साथ पंडित दीनदयाल जी की जन्मशती पर उनके प्रति आदर-सम्मान व्यक्त करने के लिए ग्राम परतोष, जिला अमेठी में पं. दीनदयाल उपाध्याय स्वास्थ्य सेवा केन्द्र की स्थापना का निर्णय लिया गया। इस निमित्त 20400 वर्गफुट जमीन क्रय कर ली गई है। अगला महत्त्वपूर्ण चरण निर्माण कार्य का है, जिसके लिए सहयोगी बन्धुओं से आर्थिक सहकार प्राप्त हो रहे हैं। इस महान यज्ञ कार्य में आहुति के लिए आप भी अपने सहकार से अनुगृहीत करें, यही आपसे विनती और प्रार्थना है।

कृपया अपनी सहयोग राशि भाउराव देवरस सेवा न्यास के पक्ष में चेक/ड्राफ्ट जो लखनऊ में देय हो, भेजने की कृपा करें। अथवा RTGS/NEFT के लिए Bhaorao Deoras Seva Nyas A/c No. 30448433657 State Bank of India, Daliganj (Niralanagar) Lucknow (IFSC Code: SBIN0003813) में धनराशि जमा कराकर अपने पैन नं. एवं पते के साथ कार्यालय के पते (सी-91, निरालानगर, लखनऊ-226020 दूरभाष 0522-4001837 मो. 9450020514) पर हमें सूचित करें।

– राजेश (संयोजक)

मो. 9793120738

भाऊराव देवरस सेवा न्यास को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80G(5)(vi) के अन्तर्गत नियमानुसार करमुक्त है। न्यास का PAN AAATB1049G है।

अभिभावक बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य को नजर अंदाज न करें

नेहा आनंद, साइकोलॉजिस्ट

अक्सर शारीरिक रूप से स्वस्थ होने को ही हम संपूर्ण स्वास्थ्य समझ लेते हैं। माता–पिता बच्चों के खानपान से लेकर उनकी नींद, साफ–सफाई आदि पर तो ध्यान देते हैं, किंतु बढ़ती उम्र के साथ मानसिकता, संवेदनाएं व भावनाएं उनके व्यवहार को दिशा देती हैं। जैसे–जैसे बच्चे बड़े होते हैं उनके परिवेश के मुताबिक उनकी सोच व आवश्यकताएं भी बदलती हैं। माता–पिता को चाहिए कि वे बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य को नजरअंदाज न करें। उनकी भावनाओं को संजीदा होकर समझें। कई बार माता–पिता का बच्चों के साथ बाल्यावस्था में सामंजस्य नहीं हो पाता, जिसके दुष्परिणाम किशोरावस्था में देखने को मिलते हैं। इस नाजुक उम्र में वे अकेलापन महसूस करने लगते हैं। इस दौर में मन व मस्तिष्क में विचारों का सुनामी सा बहाव होता है। बच्चों के आसपास यदि माता–पिता या कोई अभिभावक न हो तो वे घुटन महसूस करने लगते हैं। इस कारण मानसिक तनाव व कई मनोरोग उत्पन्न हो सकते हैं। जरूरत है कि बच्चे अपनी भावनाओं को सुरक्षित वातावरण में व्यक्त कर सकें। देखा गया है कि आजकल 11 वर्ष की उम्र के बच्चों में भी अवसाद व चिंता का शिकार हो रहे हैं। जानकारी के अभाव में माता–पिता अक्सर इसे आलसीपन या जिद का नाम दे देते हैं। जरूरी है कि बच्चों में विश्वास की भावना जागृत हो जिससे वे ज्यादा से ज्यादा अपनी बात कह सकें। जीवन की व्यस्तता में माता–पिता अपने बच्चों को दिया जाने वाला समय किसी और काम में न लगाएं। इससे बच्चे के कोमल हृदय पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इस मनोवृत्ति के साथ जब वे बड़े होते हैं तो वे खुद पर से भी भरोसा खो देते हैं। बच्चे माता–पिता के प्यार और स्नेह के अलावा उनका समय, अनुभव, डांट और भरोसा इस सब के बीच तालमेल की उम्मीद रखते हैं। पैरेंटिंग एक निरंतर प्रक्रिया है। वह पौधा है जिसे हर रोज खाद और पानी देने की जरूरत है। ❑

जानिए आंखों में धब्बों के कारण, खतरे और इलाज

धूप में ज्यादा देर रहने से हो सकती है आंखों में दिक्कत

आंखों में झाई होना सुनने में थोड़ा अजीब लग सकता है, लेकिन यह वास्तव में बेहद आम है और इससे आपकी आंखों को किसी तरह की हानि नहीं होती। हालांकि बहुत ही कम मामलों में यह एक प्रकार के कैंसर में बदल सकता है, जिसे मेलेनोमा कहा जाता है। इसलिए चाहे आई फ्रेकल्स(आंखों के धब्बे) पुराने हों या नए, उनकी जांच जरूर करवानी चाहिए। आई फ्रेकल्स आंखों में मौजूद स्पॉट को कहा जाता है। कई बार यह आपको नजर आ भी सकता है और नहीं भी। यह आपकी आई बॉल से लेकर बाहरी हिस्से पर कहीं भी हो सकता है। आमतौर पर आई फ्रैकल्स कई तरह का होता है। इनमें से एक को तकनीकी रूप से नेवस कहा जाता है। नेवस का अर्थ होता है तिल। इन्हें स्पॉट करना काफी आसान है। वहीं अन्य आई फ्रैकल्स आपकी आंखों के पीछे छिपे होते हैं और इसे एक आई स्पेशलिस्ट ही देख पाता है और इसलिए इन फ्रैकल्स के बारे में आंखों की जांच करवाने पर ही पता चलता है।

जन्म से भी हो सकता है

आई फ्रैकल्स कई कारणों से हो सकता है। हो सकता है कि जन्म से ही आपको आई फ्रैकल हों या फिर जन्म के बाद भी जैसे–जैसे आप बढ़ते हैं, यह भी विकसित हो सकता है। स्किन पर होने वाली झाइयों की ही तरह आई फ्रैकल्स भी मेलानोसाइट्स के कारण होते हैं। इसके अतिरिक्त सूरज की किरणें भी नेवस को बढ़ा सकती हैं। आईरिस नेवस भी धूप के कारण बढ़ सकते हैं। 2017 में हुए एक अध्ययन में पाया गया कि जिन लोगों ने अधिक समय धूप में बिताया, उनमें आईरिस फ्रैक्ल्स अधिक थे।

पहचानें लक्षण : कंजंक्टिवल नेवी अक्सर आखों के सफेद भाग पर साफतौर पर दिखाई देते हैं। इसका अन्य कोई लक्षण नजर नहीं आता। यह स्थिर बने रहते हैं, लेकिन समय के साथ बढ़ती उम्र

में या गर्भावस्था के दौरान इनका रंग बदल सकता है। आइरिस नेवी आमतौर पर आंखों को चेक करते समय ही सामने आते हैं। वे आमतौर पर नीली आंखों वाले लोगों में होते हैं और इन व्यक्तियों में अधिक आसानी से देखे जाते हैं। कोरोइडल नेवी होने पर कोई लक्षण नजर नहीं आते, हालांकि यह तरल पदार्थ का रिसाव कर सकते हैं।

तुरंत डॉक्टर को दिखाएं : अधिकतर मामलों में आई फ्रैकल्स होने से किसी तरह का नुकसान नहीं होता। यह ठीक उसी तरह होते हैं, जिस तरह आपकी स्किन पर फ्रैकल्स होते हैं। यह आपके विजन या अन्य आंखों की समस्याओं का कारण नहीं बनते। लेकिन फिर भी यह बेहद जरूरी है कि आप आई स्पेशलिस्ट को एक बार जरूर दिखाएं। कभी–कभी यह मेलानोमा हो सकता है और इसलिए आपको इलाज की जरूरत पड़ती है। आई स्पेशलिस्ट डॉ. रत्नामाला मृणालिनी कहती हैं कि आमतौर पर आई फ्रैकल्स हानिरहित होते हैं। लेकिन अगर आपको आंखों में मौजूद पिग्मेंट का साइज तेजी से बढ़ता हुआ नजर आए या फिर आंखों में किसी तरह की दिक्कत हो तो तुरंत आई स्पेशलिस्ट से सपंर्क करें।

एनबीटी, लखनऊ

❑

शिक्षा ने दूसरी औरतों की मदद करने का हौसला दिया

सीफिया हनीफ

सोलह साल की उम्र में मेरा निकाह करा दिया गया था। शादी के बाद में अपने पति के साथ केरल के पलक्कड़ जिले से कर्नाटक के बंगलूरू में आ गयी। हमारे समाज की यही परम्परा थी। मेरी सारी सहेलियो की शादी कम उम्र में हुई। रूढ़िवादिता के चलते हमें उतनी पढ़ाई भी नही करने दी गयी, जितनी पढ़ाई सिर उठाकर जीने के लिए जरूरी है। हमारे माता–पिता को यह एहसास ही ना था कि पढ़ाई कितनी जरूरी है। उन्हें लगता था कि बेटी की शादी कर देना ही उसकी बेहतरी की गारंटी है।

अभी मै बीस साल की भी नही हुई थी कि दो बच्चों की मां बन चुकी थी। मेरी जिंदगी अच्छे से गुजर रही थी, और मुझे किसी से कोई शिकायत नही थी। पर एक दिन अचानक एक हादसे में पति की मौत हो गई। एक झटके में सारी जिम्मेदारी मुझ पर आ पड़ी। मैं वापस अपने मायके चली गई। पर वहां भी बहूत बंदिशें थी। मायके वाले चाहतें थे कि मैं दूसरी शादी कर लूं जबकि मैंने पढ़ाई के बारे में सोचा। लेकिन पढ़ाई के लिए कमाई भी करनी थी। ऐसे में मैने पार्ट टाइम काम करना शुरू किया। जो भी पैसा आता,वह मेरी किताबों और फीस में निकल जाता। फिर भी मैनें हार नहीं मानी। मेरी जैसी कई विधवा महिलाओं के दर्द मुझे रोजाना,सुनने को मिलते। लेकिन मैं हर किसी को अपने पैरों पर खड़े होने की सीख देती रही।

मैं अपने माता–पिता पर बोझ बनने के बजाय आत्मनिर्भर बनना चाहती थी। मैं अपने और अपने बेटे के लिए कुछ करना चाहती थी। इसलिए, मैनें बंगलूरू में रहने वाले पति के दोस्तों और परिचितों से फोन पर बात की ओर नई नौकरी के वादे पर सबसे छोटे बेटे के साथ अगली ही बस से बंगलूरू चली गई। लेकिन वहां पहुचने के बाद मुझे जिंदगी के अगलें पड़ाव का सबक मिला। बंगलूरू के मैजिस्टिक बस स्टॉप पर मैं खड़ी थी। पर जिन दोस्तों के दिलासे और भरोसे पर वहां पहुंची, उन्होने बस स्टॉप पर आना तो दूर,फोन उठाना भी मुनासिब नहीं समझा। मैं दो दिन तक बुखार से तपते अपने बेटे के साथ बेबस वहीं पड़ी रही। इसके बाद पाटी नाम की एक महिला ने मेरी हालत देखी तो अपने घर पनाह दी। अगले आठ महीनों तक उन्होने मेरी और मेरे बेटे की देखभाल की उनकी खुद एक विधवा बेटी थी। काफी कोशिशों के बाद मुझे एक कॉल सेंटर में नौकरी मिल गई। नौकरी के दौरान ही मैनें केरल से पत्राचार कोर्स के जरिये 12वीं की अपनी पढ़ाई पूरी की। मगर बड़े बेटे की वजह से मुझे वापस घर लौटना पड़ा। वह महज तीन साल का था।

घर वापस लौटने के बाद मुझे एक स्थानीय

अस्पताल में रिसेप्शनिस्ट की नौकरी मिल गई। वहीं मैंने स्नातक–साहित्य पत्रकार में दाखिला ले लिया। पर मुझे अब उन विधवाओ की तकलीफें ज्यादा परेशान करती थीं,जिनके पास न शिक्षा थी, न ही इतने संसाधन कि वे जिंदगी की दुश्वारियों का मुकाबला कर सकें। मैने ऐसी विधवाओं की मदद करने का फैसला किया। अपनी तनख्वाह के एक हिस्से से मैने शुरू में पांच बेसहारा बच्चों की पढ़ाई का खर्चा उठाया। इसके साथ ही सोशल मीडिया का उपयोग किया,तो कई और लोग मेरी सहायता के लिए आए। इस राशि से मैंने विधवाओं और उन परिवारों की सहायता करनी शुरू कर दी, जिनके कमाने वाले किसी दुर्घटना का शिकार होकर हमेशा के लिए बिस्तर पर आ गए थे। मेरे प्रयासों से सैकड़ो विधवा महिलाएं अपने पैरों पर खड़ी हुई है, वे छोटे–मोटे काम करके अपना खर्च चला रही है।

जब गहरी नींद ही रोग बन जाए...

डॉ. स्कन्द शुक्ल
इम्यूनोलॉजिस्ट एवं रुमेटोलॉजिस्ट

रुचिर अपनी नींद को लेकर जिससे भी शिकायत करता है। कोई उसकी बातों को गंभीरता से लेता ही नहीं। नींद विषय ही ऐसा है कि वह चाहे कम आए या ज्यादा, लोग उसके प्रति इतने अनजान हैं कि वे कोई तवज्जो उसे दे ही नहीं पाते।

रुचिर को दिन में अचानक नींद आ जाती है। कोई भी काम चाहे कितना भी महत्वपूर्ण हो, करते समय वह झपकी लेता है और कई बार गहरी नींद सो जाता है। इसके लिए अनेक बार उसका मजाक उड़ाया जाता है और उसे ताने में मारे जाते हैं। दो–तीन बार वह इस कारण नौकरियों से भी हाथ धो बैठा है। लेकिन रुचिर की समस्या इस नींद की अति के साथ यह भी है कि कोई डॉक्टर उसकी परेशानी को गंभीरता से लेता क्यों नहीं।

दरअसल रुचिर को नार्कोलेप्सी नामक रोग है। इस रोग में उसे बहुत–बहुत नींद आती है और नींद पर उसका कोई वश नहीं होता। यही नहीं, नींद और जागरण के बीच की स्पष्टता नहीं रहती है। इस कारण रुचिर जागते हुए अनेक बार स्वप्न और दुःस्वप्न देखा करता है। लेकिन ऐसा होने पर भी वह अपने हाथ–पैर हिला नहीं पाता है। इस स्थिति को स्लीप पैरालिसिस कहा जाता है।

कई बार रुचिर के साथ एक अजीब–ओ–गरीब घटनाक्रम होता है। हंसते हुए याकिसी आवेग के क्षण में उसके हाथ–पैर जैसे पंगु हो जाते हैं अथवा वह चलते–चलते गिर पड़ता है। वह जाग तो रहा होता है, लेकिन अपने उस अंग को चाह कर भी हिला नहीं पाता। मेडिकल साइंस इस तरह की मांसपेशीय कमजोरी को कैटाप्लेक्सी कहती है। स्लीप पैरालिसिस की ही तरह कैटाप्लेक्सी भी नार्कोलेप्सी का एक महत्त्वपूर्ण लक्षण है।

कैटाप्लेक्सी की समस्या से ग्रसित रोगियों के मस्तिष्क के खास हिस्से हायपोथैलेमस में हायपोक्रेटिन नामक रसायन नहीं बनता। इस रसायन के निकलने के कारण ही हम जगे रहते हैं। निद्रा–जागरण के चक्र हमारे दिमाग में स्पष्ट रूप से घटित हुआ करते हैं। अब जब हायपोक्रेटिन नहीं होता, तब जगे रहने और इन चक्रों की व्यवस्था में समस्या आने लगती है और व्यक्ति को नार्कोलेप्सी की समस्या परेशान करने लगती है।

क्या आपके आसपास भी नींद संबंधी ऐसे लक्षणों से पीड़ित कोई व्यक्ति है। अगर हां, तो न उसका उपहास उड़ाएं और न उसके प्रति असंवेदनशील रहें। उसे किसी स्लीप–मेडिसिन के एक्सपर्ट के परामर्श की आवश्यकता है। भारत में निद्रा संबंधी रोगों के विषय में जागरूकता न के बराबर है। यहां नार्कोलेप्सी–कैटाप्लेक्सी–स्लीप पैरालिसिस जैसी समस्याओं को भूत–प्रेत–ऊपरी बाधा मानकर लोग तरह–तरह की कहानियां गढ़ा करते हैं।

सेवा की पहली सीख

बालिका गौंझा बड़ी चंचल थी। वह अक्सर दूसरे लोगों की नकल उतार कर अपनी सहेलियों को हंसाया करती थी। एक दिन की बात है। वह अपने भाई–बहनों के साथ बैठी थी। सब आपस में हंसी मजाक कर रहे थे। गौंझा ने बात–बात पर डांटने वाली अपनी एक अध्यापिका की नकल उतार कर दिखाई। सबका हंसते–हंसते बुरा हाल हो गया। हंसी के फव्वारे छूट ही रहे थे कि अचानक बच्चों के कमरे की लाइट बुझ गई। बच्चों ने देखा कि सड़क पर और पूरे पड़ोस में रोशनी थी। केवल उन्हीं के कमरे में लाइट नहीं थी। वे वहां से भाग कर अपनी मां के कमरे में गए, तो देखा कि वहां पर भी लाइट जल रही थी।

बच्चों ने पूछा, 'मां, हमारे कमरे की लाइट कैसे चली गई। सब जगह तो लाइट आ रही है।' बच्चों की बात सुनकर मां बोली, 'तुम्हारे कमरे की लाइट मैंने बंद की है।' इस पर बच्चे हैरानी से बोले, 'मां, तुमने हमारे कमरे की लाइट क्यों बंद की।' मां ने बच्चों को समझाते हुए इसका कारण बताया– दूसरों की आलोचना करने और नकल उतारने के लिए बिजली का खर्च करना मुझसे सहन नहीं होता। इस दुनिया में कितने ही बच्चे हैं जिन्होंने स्ट्रीट लाइट में अपनी पढ़ाई की और आज भी कितने लोग बिना सुविधा के जीवन गुजार रहे हैं। ऐसी बेकार की बातों के लिए बिजली जलाना, उसका दुरुपयोग करना है। मां की बात सुनकर बच्चों ने अपना सिर झुका लिया। बच्चों को अपनी गलती का एहसास होता देखकर मां ने कहा, 'किसी के व्यक्तिगत जीवन की आलोचना करने से अच्छा है किसी की सेवा करना।'

बच्चों ने मां से माफी मांगी, पर बालिका गौंझा सहमी सी खड़ी रही। उस पर मां की बातों का इतना अधिक प्रभाव पड़ा कि उसने अपना संपूर्ण जीवन ही मानव सेवा के नाम कर दिया। बालिका गौंझा ही आगे चलकर मदर टेरेसा के नाम से दुनिया भर में मशहूर हुईं।

संकलनः– दीनदयाल मुरारका

सेवा से दिल जीता

ओडिशा के कटक शहर स्थित उड़िया बाजार में एक बार प्लेग फैल गया। केवल बापू पाड़ा मोहल्ला इससे बचा हुआ था क्योंकि वहां पढ़े–लिखे लोग रहते थे और वे आसपास की सफाई पर ध्यान देते थे। वहां के कुछ लड़कों ने सफाई अभियान चलाने के लिए एक दल बनाया, जिसमें 10 साल के बच्चे से लेकर 18 साल तक के नौजवान शामिल थे। उस दल का मुखिया था 12 साल का एक बालक। उड़िया बाजार में हैदर अली नाम का एक कुख्यात व्यक्ति रहता था। बापू पाड़ा के लड़के जब उड़िया बाजार में साफ–सफाई करने आते तो हैदर ने उन्हें भगा देता। असल में बापू पार्क के लोगों के प्रति उसके मन में कटुता भरी हुई थी। वहां के वकीलों ने उसे कई बार जेल भिजवाया था। कुछ ही दिनों बाद हैदर की पत्नी और उसके बेटे को भी प्लेग हो गया।

खबर पाते ही अभियान दल का मुखिया वह लड़का उनकी सेवा में जुट गया। हैदर ने उस लड़के से पूछा, 'तुम्हें गुस्सा नहीं आता मुझ पर' लड़के ने जवाब दिया, 'मैं क्यों गुस्सा करूं' हैदर ने कहा, 'मैं तो बापू पाड़ा के लोगों को गालियां देता हूं। सेवा मंडल के लड़कों को शत्रु समझ कर भगा दिया था और तुम मेरी पत्नी और बच्चों की सेवा कर रहे हो। मैं तुम्हारी हिम्मत और उदारता से प्रभावित हुआ, बेटा मुझे माफ कर देना।' बालक ने कहा, 'आप तो हमारे पिता तुल्य हैं। माफी देने का अधिकार हमें नहीं है। हमें तो आपसे आशीर्वाद लेना चाहिए। आपकी पत्नी मेरी मां जैसी हैं और बेटा मेरे भाई जैसा है।'

हैदर अली उस बच्चे की निष्काम सेवा और मधुर वाणी से इतना प्रभावित हुआ कि वह फूट–फूट कर रोने लगा। लड़के ने कहा, 'चाचा आप फिक्र न करें, हमें सेवा का मौका देते रहें।' वह असाधारण बालक आगे चलकर नेताजी सुभाष चंद्र बोस के नाम से विख्यात हुआ।

संकलन– शुभि कश्यप

संतोष धर्म

श्रीमती रमन त्रिपाठी

चाणक्य कहते हैं, 'शांति के समान कोई तप नहीं, संतोष से बढ़कर कोई धर्म नहीं।' सुख के लिए विश्व में सभी जगह चाहत है, पर सुख उसी को मिलता है, जिसे संतोष करना आता है। एक जिज्ञासा उठती है कि संतोष है क्या? संतोष का अभिप्राय है, इच्छाओं का त्याग। सभी इच्छाओं का त्याग करके अपनी स्थिति पर संतोष करना ही सुख को प्राप्त कर लेना है। जीवन के साथ इच्छाएं, कामनाएं एवं आकांक्षाएं रहती ही हैं, लेकिन यह भी सत्य है कि सुखी जीवन के लिए हमारी इच्छा शक्ति पर कहीं तो विराम होना चाहिए। इच्छा के वेग में विराम को ही संतोष की संज्ञा दे सकते हैं। आचार्य गोरेलाल जी का मत है, 'संतोष मन की वह अवस्था है, जिसमें मनुष्य पूर्ण तृप्ति या प्रसन्नता का अनुभव करता है, अर्थात इच्छा रह ही नहीं पाती।' जीवन की गति के साथ संपत्ति और समृद्धि की दौड़ से वह सुख नहीं मिलता, जो संतोष रूपी वृक्ष की शीतल छांव में अनायास मिल जाता है। हमें चाहिए कि हम प्रयत्न और परिश्रम के फलस्वरूप प्राप्त होने वाली प्रसन्नता पर संतोष करना सीखें। निष्काम कर्मयोग, इच्छाओं का दमन, लोभ का त्याग अथवा इंद्रियों पर अधिकार–ये सभी उपदेश संतोष की ओर ले जाने वाले सोपान ही तो हैं।

सच है, संतोष प्राकृतिक संपदा है, ऐश्वर्य कृत्रिम गरीबी। संतोष का आदर्श यही है कि हम इच्छाओं को सीमित रखकर सत्य एवं ईमानदारी से भरा श्रम करें और फल की चिंता न करते हुए उसे परमात्मा और परिस्थितियों पर छोड़ दें। प्रत्येक मानव में समाज के लिए उपयोगी बनने का भाव होना चाहिए। समाज के लिए उपयोगी बनकर ही हम समस्त चिंताओं को दूर कर सकते हैं। हमें इस तथ्य का भली प्रकार बोध होना चाहिए कि सुखी होने का भाव है–दूसरों को सुखी बनाना। मन, वाणी और कर्म से शुद्ध व्यक्तित्व ही सच्चे सुख की रसधार में सदैव स्नान करता है। आत्मा में सुख–सौंदर्य की विपुल वर्षा के लिए संतोष एक सजीला मेघ है। सुख और संतोष प्रायः साथ चलते हैं। संतोष मूल है और सुख उसका फल अथवा संतोष मेघ है और सुख उससे बरसने वाला जल। संतोष सुख का सबसे बड़ा साधन है, जो मस्तिष्क के झुकाव पर निर्भर करता है। यदि मन से सुख मान लिया तो विपुल व्याधियां भी क्षण भर में उड़ जाती हैं।

आप भी लिखें

सेवा संवाद के आप सुधी पाठक हैं, आपके विचार, सुझाव हमारे लिए सदैव प्रेरणादायी रहे हैं। सेवा सम्बन्धी आलेख, सेवा के प्रेरक प्रसंग, सेवा कार्य के उल्लेखनीय व्यक्तित्व, सेवा सस्थानों का परिचय एवं उनके कार्य, सेवा को प्रोत्साहित करने वाली घटनाएं, काव्य–गीत, कथा–कहानी आदि विषयों पर सामग्री प्रकाशित करना हमारा उद्देश्य हैं। अस्तु आप से प्रार्थना है कि हमारी सीमाओं को ध्यान में रखते हुए अपना आलेख भेजकर हमारा सहयोग करने का कष्ट करें। प्रत्येक अंक में प्रकाशित आलेखों पर आप अपनी प्रतिक्रिया प्रेषित करें। पुनश्च, जिन बन्धुओं की वार्षिक सदस्यता शुल्क देय हो गये हैं तथा जो आजीवन ग्राहक बनना चाहते हैं उन सभी से प्रार्थना है कि अपेक्षित शुल्क भेज कर हमें अनुगृहीत करें।

हमारा पता है–

E-mail : sewasamwad@gmail.com / sevasamvad@outlook.com

सेवा संवाद
सी-91 निराला नगर, लखनऊ - 226020 उत्तर प्रदेश
मो0 : 9450020514, 9454049918

एम्स पावर ग्रिड विश्राम सदन
सफदरजंग, नई दिल्ली में
प्रान्तशः ठहरने वाले लाभार्थियों की संख्या
1 अप्रैल 2019 से 30 अक्टूबर 2019 तक

भारतीय राज्य/देश	सितम्बर 2019 तक	अक्टूबर 2019	कुल योग 2019–20
बिहार	2216	343	**2559**
उत्तर प्रदेश	1862	283	**2145**
मध्य प्रदेश	385	79	**464**
झारखण्ड	337	50	**387**
राजस्थान	275	39	**314**
पश्चिम बंगाल	262	38	**300**
उत्तराखण्ड	282	45	**327**
हरियाणा	165	26	**191**
नेपाल	229	23	**252**
उड़ीसा	65	18	**83**
जम्मू और कश्मीर	122	04	**126**
छत्तीसगढ़	28	03	**31**
असम	41	07	**48**
गुजरात	14	00	**14**
हिमाचल प्रदेश	11	02	**13**
महाराष्ट्र	13	00	**13**
दिल्ली	29	00	**29**
त्रिपुरा	17	07	**24**
पंजाब	17	00	**17**
मनीपुर	00	03	**03**
अरुणाचल प्रदेश	08	00	**08**
आंध्र प्रदेश	00	00	**00**
चंडीगढ़	00	00	**00**
केरल	18	04	**22**
सिक्किम	7	00	**07**
तेलंगाना	00	00	**00**
बांग्लादेश	00	00	**00**
तमिलनंडु	19	00	**19**
अफ़ग़ानिस्तान	00	00	**00**
मिजोरम	2	00	**02**
कुल	**6424**	**974**	**7398**

भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा प्रकाशित मासिक पत्र

सेवा संवाद

सम्पादकीय कार्यालय : **भाऊराव देवरस सेवा न्यास**
सी-91, निरालानगर, लखनऊ-226020
दूरभाष : 0522-4001837, 2789406 मोबाइल : 9793120738
Email : sewasamwad@gmail.com

ग्राहक सदस्यता प्रपत्र

सेवा में,

प्रबन्धक,
'सेवा संवाद'
भाऊराव देवरस सेवा न्यास
सी-91, निरालानगर, लखनऊ-226020

महोदय,

मैं/हमारी संस्था आपकी मासिक पत्रिका सेवा संवाद का वार्षिक/जीवन सदस्य बनने का इच्छुक हूँ/हैं। इस निमित्त वार्षिक शुल्क **200/-** अथवा आजीवन शुल्क **2000/-** रुपये **'सेवा संवाद'** के पक्ष में नकद/बैंक ड्राफ्ट/चेक सं. ..... दिनांक ..... बैंक .... द्वारा भेज रहा हूँ/रहे हैं। कृपया स्वीकारें। प्राप्ति की रसीद तथा पत्रिका हमारे निम्न पते पर प्रेषित करने की कृपा करें।

ह0 आवेदक

हमारा पता है :
नाम : .....
पता : .....
.....
.....
जिला: .....
प्रदेश : ..... पिनः .....
मोबाइलः .....

आलोक : चेक/ड्राफ्ट 'सेवा संवाद' के पक्ष में जारी करें अथवा बैंक आफ इण्डिया, निरालानगर, लखनऊ के खाता सं. 680610110000102 (IFSC : BKID0006806) में सीधे जमा कर जमा पर्ची की छायाप्रति के साथ सूचित करें।

"सच्चा सौदा" करना सिखाते हैं गुरु नानकदेव जी

इंद्रजीत कौर

एक समय था जब समाज में हर तरह का भेदभाव भरा हुआ था। जाति और धर्म का अंतर तो था ही, लिंग और वर्ग की असमानता भी थी। मंदिरों में निम्न जाति के लोगों का प्रवेश मना था। पाखंड और आडंबर के नाम पर महिलाओं और दलितों पर अत्याचार भी आम बात थी। गरीब तो जानवरों की तरह रहने को मजबूर थे ही।

ऐसे भेद और भय युक्त माहौल में गुरु नानक के जन्म ने अंधेरे में प्रकाशपुंज का कार्य किया। उन्होंने समाज में फैली इन कमियों का कड़ा विरोध किया। उनका स्पष्ट मत था कि हम सभी 'एक पिता एकस के हम बारिक' हैं अर्थात ईश्वर सभी का अलग–अलग नहीं है बल्कि एक ही है जिसकी हम सभी संतानें हैं। उन्होंने 'ओम' शब्द के आगे 'एक' और बाद में 'कार' लगाकर 'एकोंकार' शब्द बनाया। इसका अर्थ है, ईश्वर एक है और वही सृष्टि का कर्ता है। हर एक जीव–जंतु में उसी ईश्वरीय शक्ति के कण विद्यमान हैं। इस जादुई शब्द से उन्होंने सभी जाति, धर्म, वर्ण, लिंग और श्रेणी के लोगों को ईश्वर के ही बंदे बताकर एक स्तर पर लाने की कोशिश की। उनका मानना था कि न कोई पराया है, न ही कोई दुश्मन। भेदभाव तो मनुष्यों ने पैदा किया है। अगर यह कहा जाए कि सांप्रदायिकता निरपेक्ष, समानता से युक्त समाज की स्थापना करने का प्रयास किया, तो गलत नहीं होगा।

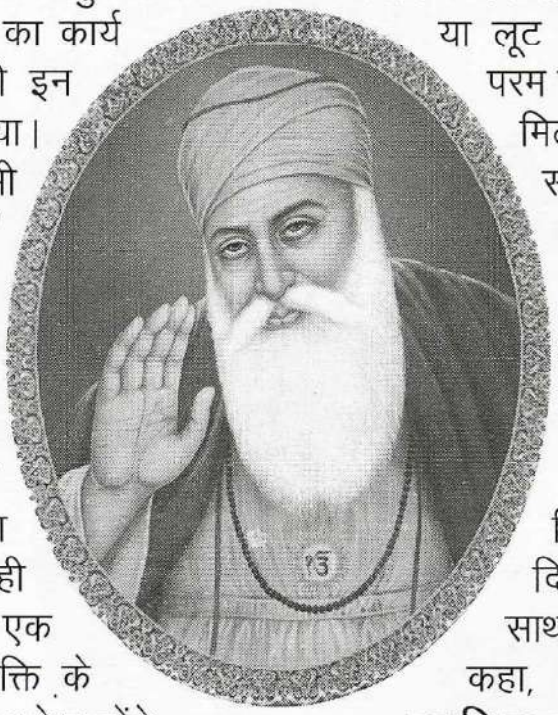

नानक ने आर्थिक असमानताओं का भी डटकर मुकाबला किया। उनका मानना था कि व्यक्ति को अपनी कमाई का दसवां हिस्सा (दसवंत) गरीबों में बांटना चाहिए। इस संदर्भ में उनके जीवन की एक घटना हम भूल नहीं सकते हैं। बचपन में ही उनके पिता द्वारा एक सौदे के लिए बीस रुपये दिए जाने पर उन्होंने वे पैसे गरीबों में बांट दिये थे। पिता के पूछने पर उन्होंने कहा कि मैंने सच्चा सौदा किया है। इस प्रकार की अनेक घटनाएं उनके जीवन में मिल जाती हैं जो हर तरह की असमानता खत्म करने की कोशिश करती हैं।

उत्तम और सहज जीवन जीने के लिए वह कहते थे कि 'किरत करो, नाम जपो और वंड छको।' अर्थात उद्यम करना चाहिए न कि भीख मांगकर या लूट कर खाना चाहिए। हमेशा उस परम शक्ति का नाम जपना चाहिए और मिल–बांट कर खाना चाहिए। वह समाज की लोक कल्याणकारी और लोकतांत्रिक व्यवस्था के हिमायती थे। वह सिर्फ समाज सुधारक नहीं बल्कि धर्मसंस्थापक, संत और साहित्यकार भी थे। उनकी रचनाओं में समाज सुधार के प्रति विचार सहज और सरल रूप में दिखाई पड़ते हैं। महिलाओं के साथ शोषण संबंध में स्पष्ट रूप से कहा, **'सो क्यों मंदा आखिये जित जमहि राजान।'** अर्थात जिसने राजाओं को भी जन्म दिया उसे तुम बुरा क्यों कहते हो वे सिर्फ रचनाएं लिखने और उपदेश देने में विश्वास नहीं रखते थे, उनकी करनी भी कथनी के साथ ही चलती थी। उन्होंने समानता और विश्व बंधुत्व के विचारों को दुनिया में हर कोने में प्रचार करने के लिए चार यात्राचक्र (उदासियां) पूरी कीं।

आज के समाज की मुख्य समस्याओं को देखा जाए तो नानकदेव जी की वाणी इनका सटीक इलाज हो सकती है। सारे भेदभावों को मिटाते हुए उनकी वाणी स्वस्थ समाज का निर्माण करती है। यह सभी का साथ और विकास का भी रास्ता खोलती है। क्यों न हम सभी उनके पांच सौ पचासवें जन्मोत्सव पर उनके बताए मार्गों पर चलने की प्रेरणा लें।

डेंगू व स्वाइन फ्लू में फायदेमंद है

प्रस्तुति–सेवा संवाद संकलन–शुभी

प्राण मुद्रा

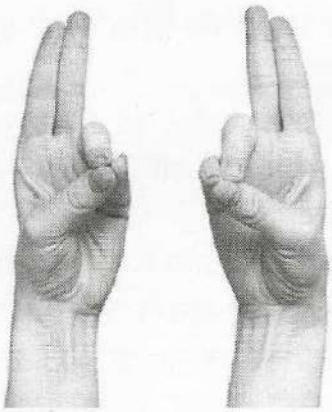

डेंगू के साथ ही स्वाइन फ्लू से बचने और निजात पाने के लिए प्राण मुद्रा लाभकारी है। हृदय से कंठ तक के सभी रोग इस मुद्रा से दूर होते है। माना जाता है कि छह माह तक इसके निरंतर अभ्यास से चश्में से छुटकारा पाया जा सकता है। लकवे और तन–मन की कमजोरी,अनिद्रा में भी प्राण मुद्रा बहुत उपयोगी है।

इससे एकाग्रता बढ़ती है,रक्त शुद्ध होता है और रक्त वाहिनियों के अवरोध भी दूर होते हैं। नस–नाड़ियों की पीड़ा को दूर करने में यह मुद्रा बेहद लाभदायक है। कनिष्ठा, अनामिका और अंगूठे के शीर्ष को मिलाएं। शेष उंगलियां सीधी रखें। रोजाना 45 मिनट तक इसका अभ्यास करें।

चतुरंग दंडासन

कंधे और पीठ का दर्द करता है दूर

घुटने, छाती, ठोड़ी

अर्ध चतुरंग

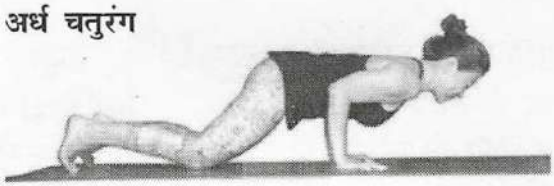

चतुरंग दंडासन

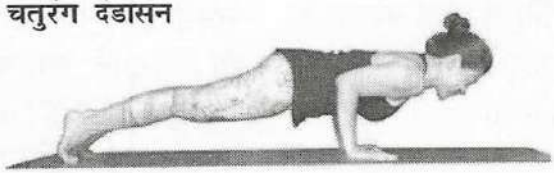

इस आसन से दिमाग और मांसपेशियों के बीच संतुलन कायम होता है। लंबे समय तक बैठकर काम करने वाले इसका अभ्यास करें तो कंधे और पीठ के दर्द से बच सकते हैं। पेट की ढीली चर्बी भी इससे टाइट होती है। पेट के बल लेटकर दोनों हाथों को सामने रखें। अब कमर से नीचे का भार पैरों के पंजों पर डालते हुए सांस भरें और दोनों घुटनों को ऊपर उठाएं, ताकि शरीर का पूरा भार दोनों हाथों पर आ जाए। इस अवस्था में आपके दोनों हाथ कोहनियों तक जमीन से सटे रहें और आपका पूरा शरीर फर्श के समानांतर आ जाएगा। इस स्थिति में करीब आधे मिनट तक रहने के बाद सांस छोड़ते हुए धीरे–धीरे पूर्वावस्था में आ जाएं। गर्भावस्था में यह आसन वर्जित है।

नेत्रकुम्भ चिकित्सालय में वरिष्ठ नेत्र चिकित्सकों द्वारा नेत्र चिकित्सा

RNI No. UPHIN/2005/15853
सेवा संवाद दिसम्बर 2019
डाक पंजीकरण क्र. SSP/LW/NP-136/2019-21
प्रेषित डाकघर – R.M.S. चारबाग, लखनऊ
कैलेण्डर वर्ष 2019–21
प्रेषण तिथि– प्रत्येक माह 26 व 30
कुल मुद्रित पृ. की सं. 32

नेत्रकुम्भ चिकित्सालय में वरिष्ठ नेत्र चिकित्सकों द्वारा नेत्र चिकित्सा

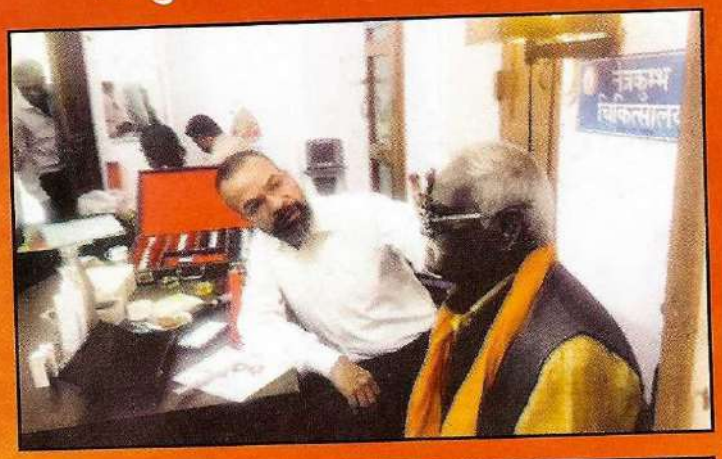

मुद्रक एवं प्रकाशक : **श्री जितेन्द्र कुमार अग्रवाल** द्वारा भाऊराव देवरस न्यास, सी–91, निरालानगर, लखनऊ (उ.प्र.) के लिए **बर्फानी इण्टरप्राइजेज,** ए–1, गोविन्दा बिल्डिंग, शाहनज़फ रोड, हजरतगंज, लखनऊ, से मुद्रित। **सम्पादक** : डॉ शिवभूषण त्रिपाठी